RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/प्रकाशन तिथि 25 दिसम्बर 2018

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका जनवरी 2019

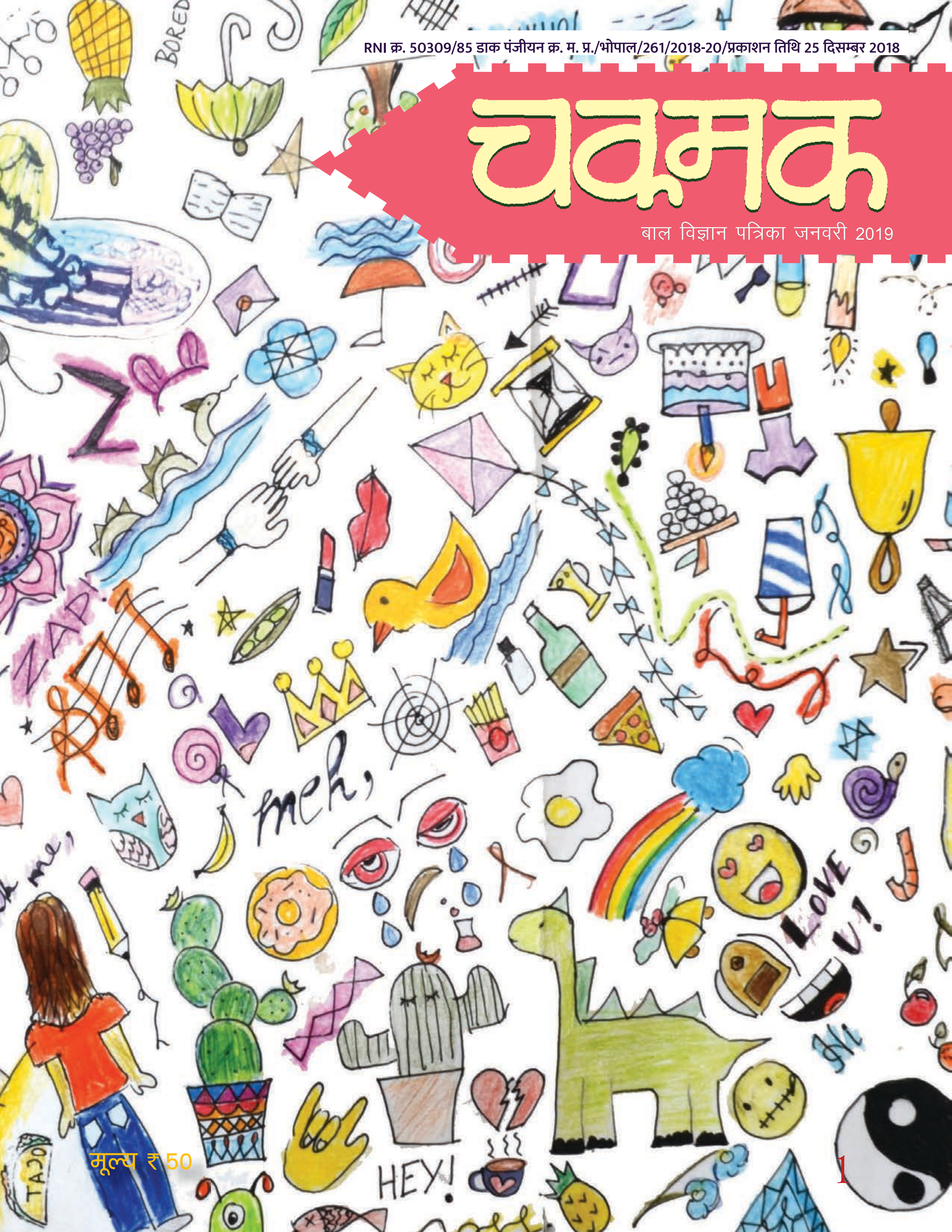

मूल्य ₹ 50

आपके लिए एकलव्य की कुछ नई किताबें।

इन्हें आप www.pitarakart.in पर ऑर्डर करके मँगा सकते हैं।

अंक 388 जनवरी 2019

चकमक

अण्डा झूल रहा था झूला

श्याम सुशील
चित्र: हबीब अली

डाली पर था एक घोंसला
अण्डा झूल रहा था झूला।
आजू-बाजू डोल रही थी
चिड़िया अम्मा बोल रही थी -
बस कुछ दिन की बात है बच्चे
जब तुम आँखें खोलोगे,
अपने पंखों पर झूलोगे
आसमान तक छू लोगे!

इस बार

नैदोष - महाश्वेता देवी	4
शरणार्थी इन्सान हैं, संख्या नहीं! - सजिता नायर	9
तुम भी जानो	12
इन्दौर डायरी-2 तीन बहादुर...- दिलीप चिंचालकर	13
बड़ा होने का एक फायदा...- उमा सुधीर	15
मेरा घोड़ा - श्रीनाथ सिंह	17
तुम भी बनाओ...घोड़ा	17
टेलीस्कोप - अनिल धीमान	19
नए साल के कुछ संकल्प...- रोहन चक्रवर्ती	22
ऊँच-नीच का पापड़ा,...- कनक शशि	24
जवाब - कहानी पूरी करो	27
अण्डों का आकार कैसे तय होता है?	30
उड़ती चिड़ियों के झुण्ड - विनोद कुमार शुक्ल	31
मेरा पन्ना	35
भूलभुलैया	40
माथापच्ची	41
चित्रपहेली	43
फोटोग्राफर - वीरेन्द्र दुबे	44

आवरण चित्र: द येलो ट्रेन स्कूल कोयम्बटूर के कक्षा 8 के विद्यार्थी

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सम्पादकीय सहयोग
कविता तिवारी
सजिता नायर
गुल सारिका झा
सीमा

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म. प्र. 462 016, फोन: (0755) 4252927, 2550976, 2671017
email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

नैढोष

महाश्वेता देवी
बांग्ला से अनुवाद - टुलटुल बिस्वास

कथा-कहानियों की गायें पेड़ों पर चढ़ती हैं और हमारी माँ की गाय दूसरी मंज़िल पर चढ़ जाती थी, मांस-मच्छी खाती थी। माँ को जिन्होंने पाला-पोसा, उनकी वह मोनीमाशी, हमारी मोनी-दीदीमाँ (नानीमाँ), अब 93 की हैं। देवघर में रहती हैं, कुछ गायों के साथ। माँ को शायद गऊ-प्रेम उन्हीं से मिला होगा। अब भी माँ के पास गाय है। वह गाय हमने कभी देखी नहीं। वह पौटोलबाबू के बगीचे में चरती है, मेनका के घर बछड़ा देती है, और पुन्नी की माँ उसका दूध दुहकर पीती है।

मेरे बाबा माँ के लिए, उस गाय के लिए, बराबर खली-चूनी-भूसा खरीदते जाते हैं। गाय की देखभाल के लिए जतीन आता है। पर गाय को किसी ने देखा नहीं है।

1944 के अन्त में या 1945 के शुरू में बाबा का तबादला उस मुफस्सल शहर में हुआ। आज भी लगता है कि बाबा का तबादला उस शान्त शहर में होना चाहिए था या नहीं। मैं थी शान्तिनिकेतन में। मेरे एक भाई और एक बहन मिलकर फलवालों के खरीदे हुए सारे पेड़ों के आम और लीची साफ कर देते थे। फलवाले बाबा से पैसे ले जाते। बाबा अकसर मच्छी पकड़ने स्टेशन चले जाते। स्टेशन पर जो सबसे बड़ी मच्छी मिल रही हो उसे खरीदकर, उसके सिर से पूँछ तक 20-25 नए कँटिया फँसाकर घर ले आते। आते ही कहते, "जैसे ही पोखर में बंसी डाली...।"

खैर, बाबा के दो चपरासी थे। दो भाई। आज वे उस शहर के गणमान्य लोगों में हैं और उनके तब के अफसर से भी बड़े घर में रहते हैं। नाम-वाम छोड़िए। छोटे भाई हमारे यहाँ दूध का बन्दोबस्त करते थे। माँ को वह दूध पसन्द नहीं था। बाबा को सलाह देने वाले लोग माँ या हम लोग नहीं थे। वे थे दफ्तर के माली, रिक्शावाला, आम का व्यापारी आदि। यही लोग सारी महत्वपूर्ण चीज़ें तय कर देते थे। कौन किस स्कूल में पढ़ेगा या पढ़ेगी, इस साल कितने मन चावल खरीदना होगा, दुर्गा पूजा की छुट्टियों में कहाँ जाना है...। बाबा ने जब घर बनाया, वह

भी राजमिस्त्री और गाय सम्हालने वाले जतीन की सलाह से। इसलिए उस घर में रहने के कमरे हैं छह। अन्दर-बाहर जाने के फाटक हैं आठ। खिड़की-दरवाज़े अनगिनत हैं और पानी की टंकी है एक दस-मंज़िले घर की टंकी लायक।

माँ के सलाहकार भी घर के कामकाजी लोग थे – सत्यनारायण ठाकुर, मेनका और नारान। वही बता देते थे कि पूजा में किसके लिए कौन-से कपड़े लिए जाएँगे, किस उत्सव पर क्या-क्या पकेगा।

माँ की टोली अलग, बाबा की अलग। दोनों टोलियों में एक-दूसरे पर बहुत-से अविश्वास के मामले थे। आपस में सूझ-बूझ की लड़ाइयाँ भी चला करती थीं। खैर, माँ ने अपनी टोली की सलाह से छोटे चपरासी से एक गाय खरीदी। सुनने में आया कि अब घर की दूध की समस्या का हल निकल आया।

यह पहली बार हुआ कि माँ की किसी बड़ी खरीदारी के विषय में नारान की सलाह नहीं ली गई।

नारान हम में से किसी पर भरोसा नहीं करता था। वह हर चीज़ के बारे में हमारा जो भाई अब नहीं रहा, उसी अबू से सलाह-मश्वरा लेता था। अबु तब 10 बरस का था। नारान को शादी करनी है, लड़की देखने जाता था अबू। नारान ने एक बार अबू के साथ जाकर बेलेडाँगा के हाट से माँ के लिए गाय खरीदी थी।

गाय खरीदने पर उसे पैदल चलाकर लाना होता है। उस पैदल चलाने में ही गड़बड़ हो गई क्योंकि नारान बीच-बीच में गाँजा पीने बैठ जाता था। खैर, नारान ने खरीदी थी एक काली, दुधारू गाय। माँ जब नई गाय के खुर में पानी और माथे पर सिन्दूर देने द्वार पर खड़ी थीं, देखा नारान एक विशाल सफेद बैल को हँकाता चला आ रहा है! इसीलिए अब की बार नारान से कोई सलाह नहीं की गई। और तुम लोग समझ ही रहे होगे कि गाय खरीदने का पैसा देंगे बाबा, पर इस बारे में उनसे कोई सलाह नहीं की जाएगी!

इसलिए माँ ने छोटे चपरासी की दुधारू गाय खरीदी और उनके इस गाय खरीदने के समय से ही बाबा और नारान की कैसी तो एक आपसी बन गई। दोनों ही मुस्कराए। फिर जब माँ ने शक करते हुए कहा, "नारान, गाय खरीद रहे हैं तो हँसे क्यों? गाय अच्छी नहीं?"

नारान ने कहा, "ऐसा क्यों?"

बाबा से माँ ने कुछ नहीं पूछा।

आयकर दफ्तर में काम करते हुए बाबा ने ही तो खिड़की से निहार-निहारकर देखा था – नैदोष को छोटे से बड़े होते हुए। बाबा को सब पता था। पर कहा कुछ नहीं।

गाय घर आई। ऐसी बदसूरत गाय तुमने कभी नहीं देखी होगी। पेट मोटा। चारों टाँगें पतली-पतली, बाहर की ओर छितरी हुई, डगमगाती-सी। पूँछ कड़क। आँखों की दृष्टि कैसी तो उग्र-सी।

गाय को तिलक-विलक करके माँ ने छोटे चपरासी को नए कपड़े दिए। कपड़े लेकर वह घर के पास के पोखर-घाट पर नहाने उतरे। धोती को धोकर किनारे पर सूखने फैला दिया। और तुरन्त ही गाय ने उसे कचर-कचर करके आधा खा लिया, आधा फाड़ दिया। फिर जितनी बार वे पानी से बाहर आने की कोशिश करते, गाय ने उन्हें वापस पानी में धकेल फेंका।

माँ ने कहा, "आहा रे, मन की तकलीफ से ऐसा कर रही है। बाल-बच्चों को अगर बाप दूसरे के हाथों सौंप दे तो मन को कष्ट नहीं होगा क्या?"

बाबा बहुत चिन्तित हुए। दफ्तर के माली से बोले, "तुम्हारी गिन्निमाँ (मालकिन) ने जो किया, उसका फल बहुत दूर तक जाएगा।"

पर वह फल क्या होगा और कितनी दूर तक जाएगा, यह बाबा भी तब समझे नहीं थे। नैदोष की पूरी जीवनी लिखना मुमकिन नहीं है। नैदोष लिख जाती तो लिखा जाता। हालाँकि नैदोष ने स्कूल की सभी कक्षाओं की किताबें खाई थीं (क्योंकि हम नौ भाई-बहन थे और तब सिर्फ मैं ही कॉलेज में पढ़ती थी, बाकी सब स्कूल की अलग-अलग कक्षाओं में पढ़ते थे और सभी कक्षाओं की किताबें घर में होती थीं), पर उसने कलम या स्याही कभी नहीं खाई। कलम-स्याही के प्रति मन में घृणा

या भय हो तो फिर आप लिख नहीं सकते। नैदोष का लिखना नहीं हुआ क्योंकि उसने कलम नहीं खाई।

खैर। जल्दी ही देखा गया कि नैदोष हर कभी घर में घुस आती है (तब घर एक-मंज़िला था) और किताबें खा जाती है। बाबा कहते, "तेज़ी से पढ़ाई-लिखाई ऐसे ही सीखी जा सकती है। देखो, उसको देखो, कितना निश्चयपूर्वक किताब खा रही है।"

सचमुच, जल्दी-जल्दी सबकुछ जान लेने की होड़ में नैदोष व्याकरण से लेकर अँग्रेज़ी में पत्र-रचना तक की किताबें खा लेती थी। तुम समझ ही रहे होगे कि नैदोष के जीवन के उस दौर में उसके गोबर से उपले नहीं थापे जा सकते थे। उसे अनीष, अबू और फल्गू की किताबों से प्यार था। पर सबसे छोटे भाई टान्टु की किताबें ही सबसे ज़्यादा पसन्द थीं उसे। मँझली बहन मितुल और चौथी बहन बुड़ी बचपन से ही पूरी पागल थीं। उनकी किताबें वह बचा-बचाकर, चुन-चुनकर खाती थी। छोटी बहन शारी और सँझली बहन कांची

की किताबें और फ्रॉक, दोनों ही खा लेती थी। बाबा की बनियान और कुछ टाइयों को छोड़ और कुछ नहीं खाया कभी। रंगों के बारे में भी उसकी पसन्द-नापसन्द बहुत स्पष्ट थी (किस बारे में नहीं थी?) और नीले रंग का वह जो देखे वही खा जाती थी। बाबा की बनियानों को तब से आज तक नील नहीं लगाया जाता।

यह सब खाकर ही शायद उसे यह पता चला कि मांस-मच्छी न खाकर शरीर तगड़ा नहीं हो सकता। उसे मांसाहारी बनाने का कसूर मेरा और माँ का है। उस बार बरतन माँजने वाली महरी नहीं आ रही थी। हम लोग केले के पत्तों पर खाना खाकर उन्हें बाहर डाल आते थे। हिलसा के काँटों-भरे पत्ते खाकर नैदोष की मांस-मच्छी में रुचि जागी। माँ हर समय उसे समझातीं, गायें मच्छी नहीं खाती हैं।

नैदोष क्यों माने? एक दिन उसने खली-भूसे की नाँद को लात मारकर तोड़ डाला। बहुत गुस्से से फोंश-फाँश आवाज़ें निकालीं। फिर सीधे रसोई में जाकर शाम के लिए हल्की तलकर रखी गईं सारी हिलसा मछलियाँ खा गई। बिल्ली के डर से नहीं, नैदोष के डर से माँ ने मांस-मच्छी छींके पर रखना शुरू किया। जब तक ऐसा नहीं किया था, उसने बड़ी मच्छी, छोटी मच्छी, झींगा, केकड़े, मांस सभी कुछ खाया। पर उसे पसन्द थीं, हिलसा और मुर्गी। मांस-मच्छी खाए तो प्याज़-लहसुन भी खाया होगा, स्वाभाविक ही। तरकारी की टोकनी से चुनकर वह भी खाया।

बाबा और नारान आपस में कहते, गाय के लच्छन दिन-दिन बहुत बिगड़ते जा रहे हैं। नन्दन रिक्शावाले ने भी बाबा से कहा था, "शायद नैदोष को भूत लग गया है।"

मांस-मच्छी खाने से पैरों की ताकत बाघों की तरह हो जाएगी। इसलिए आखिर उसे गोठे में बन्द रखा जाता था। माँ की गायों को हमेशा खुली हवा दरकार रहती थी। इसलिए गोठे का दरवाज़ा छोटा होता था, ऊपर तार बँधा रहता था। नैदोष उस फाँक (जगह) में से जिम कॉर्बेट के रुद्रप्रयाग के चीते की तरह छलाँग मारकर पार निकल जाती थी। एक भी बार पैर नहीं उलझे उसके। बाहर आते ही वह खट-खट करती रसोई में चढ़ आती थी। अगर किसी दिन निरामिष खाना मिले तो क्या गुस्साती। लाल आँखों से घूरती।

इसके बाद ही एक दिन उसने बिलकुल नया रास्ता अपनाया। भोर होते ही बाहर निकल जाती थी। माँ कहतीं, "सुबह की हवा खा रही है।" पर वह ऐसी पुलिस-विद्रोही निकलेगी, कौन जानता था!

सुबह-सुबह वह जाकर गंगा के किनारे खड़ी हो जाती थी। बिहारी हवलदार गंगा-स्नान करके जितनी बार किनारे ऊपर आते, उतनी ही बार वह उन्हें ढूँ (धक्का) मारकर वापस पानी में गिरा देती। ब्रिटिश पुलिस के साथ लड़ना आसान बात नहीं थी। नैदोष शायद गुलाम भारत की एकमात्र गाय थी जिस पर कई पुलिस केस दायर किए गए थे। यह दौर भी लम्बा चला।

उन दिनों नैदोष लगभग साल भर कचहरी के आसपास रही। अदालत के मैदान में बछड़ा भी जना, पर उसका दूध किसने पिया, पता नहीं। क्योंकि बहुत अनुभवी ग्वाले भी नैदोष का दूध नहीं दुह पाते थे।

इस तरह खतरनाक स्पीड से ज़िन्दगी का तीन-चौथाई भाग काटकर एक दिन खट-खट करती वह घर लौट आई। माँ की खुशी का ठिकाना न था! "नैदोष लौट आई है, नैदोष अच्छी हो गई है। उसे याद आ गया है कि वह घरेलू गाय है!"

उन दिनों उसके लिए भूसा छत पर ढेर बनाकर रखा जाता था। एक दिन गज़ब की खट-खट आवाज़ आ रही थी। देखा नैदोष गम्भीर मुद्रा में सीढ़ी चढ़कर ऊपर जा रही है। गोठे का भूसा नहीं, छत पर रखा भूसा ही उसे पसन्द था। अनीश और अबू, लड़के जैसे होते हैं, माँ को तर्क से समझाने लगे कि नैदोष को हर चीज़ की जड़ तक जाना पसन्द है। इसलिए वह गोठे का भूसा नहीं, वहाँ का भूसा खाना चाहती है जहाँ से गोठे में भूसा लाया जाता है। वही भूसा उसे पसन्द है।

जाड़ों का मौसम था। पूनम का दिन। नैदोष सुबह से निकल गई थी। शाम को लौटी। कुछ मदहोश-सी।

मेनका ने खबर दी: गाछी-लोगों ने जो ताड़ का रस इकट्ठा किया था, नैदोष ने गाछियों को भगाकर सारा दिन धूप में बैठकर बेइन्तहा ताड़ का रस पिया है। बहुत नशा हो गया है। पैर डगमगा रहे हैं।

पर नैदोष उसी हाल में छत पर चढ़ गई। भूसा खाते-खाते, एक वक्त, जब चाँद निकला था, वह बगैर मुँडेर की छत पर खड़ी हो गई।

एक बार जो खड़ी हो गई, फिर नैदोष न हिलती न डुलती। हम लोग बेहद डर गए। बाजू के घरवाले मौसाजी से सब डरते थे। सब जानते हैं कि वे महीने में सिर्फ एक बार खिड़की खोलते हैं, चाँद देखने। नैदोष ने उनकी नज़रों से चाँद को छुपा रखा था। और हुआ भी वही। मौसाजी खिड़की खोलते ही चीख उठे, "यह क्या? यह क्या? मुझे पूनम का चाँद देखना है। गाय का सिल्हुएट क्यों दिख रहा है? गाय कुछ-कुछ टुन्न क्यों दिख रही है। क्या मामला है?" उस दिन बाबा ही नैदोष को नीचे लाए थे।

ऐसी ज़िन्दगी के कारण ही शायद नैदोष बीमार हो गई। दुनिया-जहान से नहीं डरती थी। पर मितुल उसको एक सीट दिखाती। बाबा अपनी टोली के मश्वरे से बहुत-सी ज़रूरी चीज़ें खरीद लाते थे। तब युद्ध खतम हुआ था। युद्ध की जीपों में खाकी कपड़े की गद्दियाँ या सीट होते थे। बाबा जाने किसकी सलाह से कलकत्ता से वैसी सीटें खरीद ले आए थे। मितुल जब वैसी एक सीट दिखाती तो नैदोष डरकर चारों खाने चित हो जाती थी।

जब नैदोष बीमार हुई तो पशुओं के डॉक्टर आए। "क्या हुआ बाबा?" कहकर जैसे ही आगे बढ़े नैदोष ने उन्हें सींग दिखाकर भगा दिया। उन्होंने हाउ-हाउ करके बरामदे के खम्भे को दोनों हाथों और दोनों पैरों से जकड़ लिया। नैदोष उनकी पैंट में पीछे से सींग मारती रही। क्या मुसीबत थी! आखिरकार उन्हें ही डॉक्टर के पास ले जाना पड़ा।

उसी बीमारी से नैदोष मर गई। कुछ नहीं कर सके उसके लिए। कोई उसके पास तक नहीं जा पाया।

अब भी मुझे नैदोष की बातें खूब याद आती हैं। नैदोष को भूलना नामुमकिन है।

शरणार्थी इन्सान हैं, संख्या नहीं!

सजिता नायर

“...हर काम जो आपको सामान्य लगता है
वह मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है।”

“सोचो तुम 16 के हो और हमेशा तुम्हें मौत का डर है... तुम्हें डर है कि तुम अपने किसी करीबी को खो दोगे। एक हॉरर फिल्म की तरह, एक असली की हॉरर फिल्म।”

2014 में जब सीरिया के कोबेन शहर में आईसिस आतंकवादियों और कुर्दिश आर्मी के बीच लड़ाई हुई तो लाखों परिवार उस लड़ाई के बीच फँस गए। उनमें से एक नुजीन का परिवार भी था।

नुजीन के परिवार ने लड़ाई से बचने के लिए कुछ दिनों के लिए तुर्की जाने के बारे में सोचा। पर, लड़ाई खतम न होते देख परिवारवालों ने फिर जर्मनी में रह रहे नुजीन के भाई के पास जाने का निर्णय लिया। घर के हालात इतने अच्छे नहीं थे कि पूरा परिवार वहाँ जा सके। आखिरकार तय हुआ कि 16 साल की नुजीन अपनी 25 साल की बहन नसरीन के साथ जर्मनी जाएगी। नुजीन को लग रहा था मानो उसका सालों का सपना पूरा हो रहा हो।

सीरिया से जर्मनी का सफर लगभग 3,500 कि.मी. का है। कई देशों से होकर गुज़रना पड़ता है। 16 साल की नुजीन ने पता कर लिया था कि इस लम्बे सफर में वो किन-किन देशों में रुकेगी और वहाँ पर उसे देखने के लिए क्या-क्या मिलेगा। उसने अभी तक जिस दुनिया के बारे में सिर्फ किताबों में पढ़ा था और जिसे टीवी में देखा था, उसको वो सब खुद अपनी आँखों से देखने को मिलेगा।

“मेरे आसपास बच्चे रो रहे थे और मुझे ऐसा लग रहा था मानो मैं पागल हूँ क्योंकि मैं अकेले पूरे समय मुस्करा रही थी। कभी-कभार अच्छा होता है कि आप इतने छोटे हों कि आपको आसपास क्या हो रहा इसका अन्दाज़ा न हो। शायद खतरों को समझने के लिए मैं छोटी थी।”

“अन्य सभी लोगों की तरह विकलांग शरणार्थी भी कैम्प में कई सेवाओं के हकदार हैं जैसे कि टॉयलेट और शावर। ये तो सामान्य बाते हैं।”

नुजीन को जन्म से ही सेरिब्रल पाल्सी है और इसीलिए वह व्हीलचेयर के सहारे चलती है। उसका ज़्यादातर समय घर में ही गुज़रा है। उसके मनोरंजन का ज़रिया अमरीकी धारावाहिक, फिल्में, डॉक्यूमेंट्री और किताबें थीं। उसको अँग्रेज़ी सिखाने का श्रेय वह इन्हीं सबको देती है खासकर उसका पसन्दीदा सीरियल *डेज़ ऑफ अवर लाइव्ज़* को।

अगस्त 2015 में नुजीन और नसरीन ने अपना सफर शुरू किया। उनका सबसे पहला काम था उत्तरी तुर्की में इज़मिर पहुँचकर तस्करों की मदद से नाव लेना, जिससे वे समुद्र पार कर ग्रीस के लेस्बोस द्वीप पहुँच सकें। इस काम में मुश्किल उन्हें व्हीलचेयर की वजह से हुई क्योंकि आम हालात में भी उस रबर बोट में व्हीलचेयर से सफर करना खतरे से खाली नहीं था। सामान्यतः जिस बोट में अधिकतम 15 लोग बैठ सकते थे, उसमें 50-60 लोग बैठे हुए थे। व्हीलचेयर लोहे का होने की वजह से भारी था और रबर के बोट को कभी भी पंचर कर सकता था। किसी तरह लोग नुजीन, नसरीन और व्हीलचेयर तीनों को बोट में बैठाने के लिए मान गए। लेस्बोस पहुँचने वाले शरणार्थियों के लिए सबसे पहले मोरिया कैम्प पहुँचना ज़रूरी होता है। चूँकि नुजीन वहाँ नहीं रह सकती थी इसलिए उसे अपना कैम्प बदलना पड़ा।

“मैं मोरिया में टॉयलेट नहीं जा सकती थी क्योंकि वहाँ रैंप ही नहीं थे। वहाँ की ज़मीन भी समतल नहीं थी जिस वजह से मुझे हल्की चोटें लग गईं। लोगों को लगता है कि हम आराम से व्हीलचेयर में बैठे हैं और कुछ नहीं कर रहे। बल्कि हकीकत में यह बहुत दर्दनाक है। अगर कहीं ढलान हो तो मुझे डर लगता है कि कहीं मैं चेयर से गिर न जाऊँ।”

वहाँ से आगे ग्रीस स्थित पैरयुस तक का सफर 14 घण्टों का था। पैरयुस पहुँचने के बाद नुजीन और नसरीन को मेसेडोनिया होते हुए सर्बियन-हंगेरियन सीमा पहुँचना था। पर मेसेडोनिया के सीमा रक्षक इतने सारे लोगों के आने से परेशान हो चुके थे। लोगों को भगाने के लिए उन्होंने आँसू गैस छोड़ना शुरू कर दिया। किसी तरह दोनों बहनें बचकर अपने अगले पड़ाव पर पहुँचीं। लेकिन जब तक वे पहुँचे तब तक सीमा बन्द की जा चुकी थी। हंगरी अब और रिफ्यूजी को शरण नहीं देना चाह रहा था। सर्बियन सीमा पर खड़े लोगों ने नुजीन को एकदम सामने आने दिया यह सोचकर कि उसे देखकर हंगरी सीमा पर खड़े जवान उन्हें दया से आने देंगे। पर कोई फायदा नहीं हुआ। इस वजह से फिर नुजीन और उसकी बहन ने अपना रास्ता बदला और वो क्रोएशिया होते हुए स्लोवेनिया पहुँची। आखिरकार सितम्बर 2015 के आखिरी में वे जर्मनी में अपने भाई से मिलीं। स्लोवेनिया नुजीन के पूरे सफर का सबसे बुरा समय रहा क्योंकि वहाँ उसे 24 घण्टों के लिए कैद किया गया था। “वह एक बन्द कैम्पस था। खिड़कियों में बार लगे हुए थे। मैं उस समय को नहीं याद करना चाहूँगी।”

नुजीन की ही तरह हर दिन ऐसे कई सीरियन लोग रहने के लिए सुरक्षित जगह की तलाश में निकलते हैं। और इस सफर को पूरा करने के लिए लोगों के पास दो चीज़ों का होना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है – मोबाइल और पैसा। मोबाइल के ज़रिए उन्हें तस्करों और रिश्तेदारों से बात करने में आसानी होती है। साथ ही साथ, कौन से रास्ते सुरक्षित हैं कौन से नहीं यह भी पता चलता रहता है। तस्करों और टैक्सी ड्राइवरों से मदद लेने के लिए पैसे लगते हैं और बीच में ट्रेन से भी रास्ता तय करना पड़ता है। इन सब में लगभग 6,000 यूरोज़ (लगभग 5,00,000 लाख रुपए) लगते हैं। नुजीन और नसरीन की मदद उनके सीरिया में बसे हुए भाई ने की जो खुद

अभी भी सीरिया में बसे हुए हैं। नुजीन अब 19 साल की हो चुकी है। अब वह बड़े-बड़े मंचों से शरणार्थियों के बारे में बताती हैं। नुजीन ने मशहूर लेखिका और पत्रकार क्रिस्टीना लेम्ब के साथ मिलकर एक किताब भी लिखी है *द गर्ल फ्रॉम अलेपो*। नुजीन खुद को एक पीड़ित के रूप में नहीं देखती – “इस दुनिया में तुम्हें जो चाहिए उसके लिए लड़ना ही पड़ता है... इसलिए हाँ, यह सफर एक नई ज़िन्दगी के लिए है।”

16 साल की उम्र में जब उसने अपना घर छोड़ा था तो नुजीन के तीन सपने थे: अपने भाई और बहन से जर्मनी में मिलना, इंग्लैंड की रानी से मिलना और एस्ट्रोनॉट बनना। इनमें से एक सपना नुजीन का पूरा हो चुका है और इंग्लैंड की रानी से भी वो एक दिन मिल ही लेंगी। फिलहाल नुजीन अपने तीसरे सपने को पूरा करने में लगी है।

मैंने अपना दिल दो टुकड़े कर लिया है
और उसका आधा हिस्सा अभी भी सीरिया में है
जब सीरिया में सूरज चमकता है,
गर्माहट खिल उठती है मेरे गालों पर।
और जब वहाँ डूबता है सूरज
मेरे दिल में बची रहती है सायों
और बन्द होते फूलों की याद।

मोहम्मद असाफ़ (12 वर्ष)

“मुझे लगता है विश्व के सभी नेता अपना होमवर्क नहीं कर रहे हैं। मुझे अपना गणित का होमवर्क करना है। उनका होमवर्क ज़िन्दगी बचाना होना चाहिए और वो वह नहीं कर रहे हैं।”

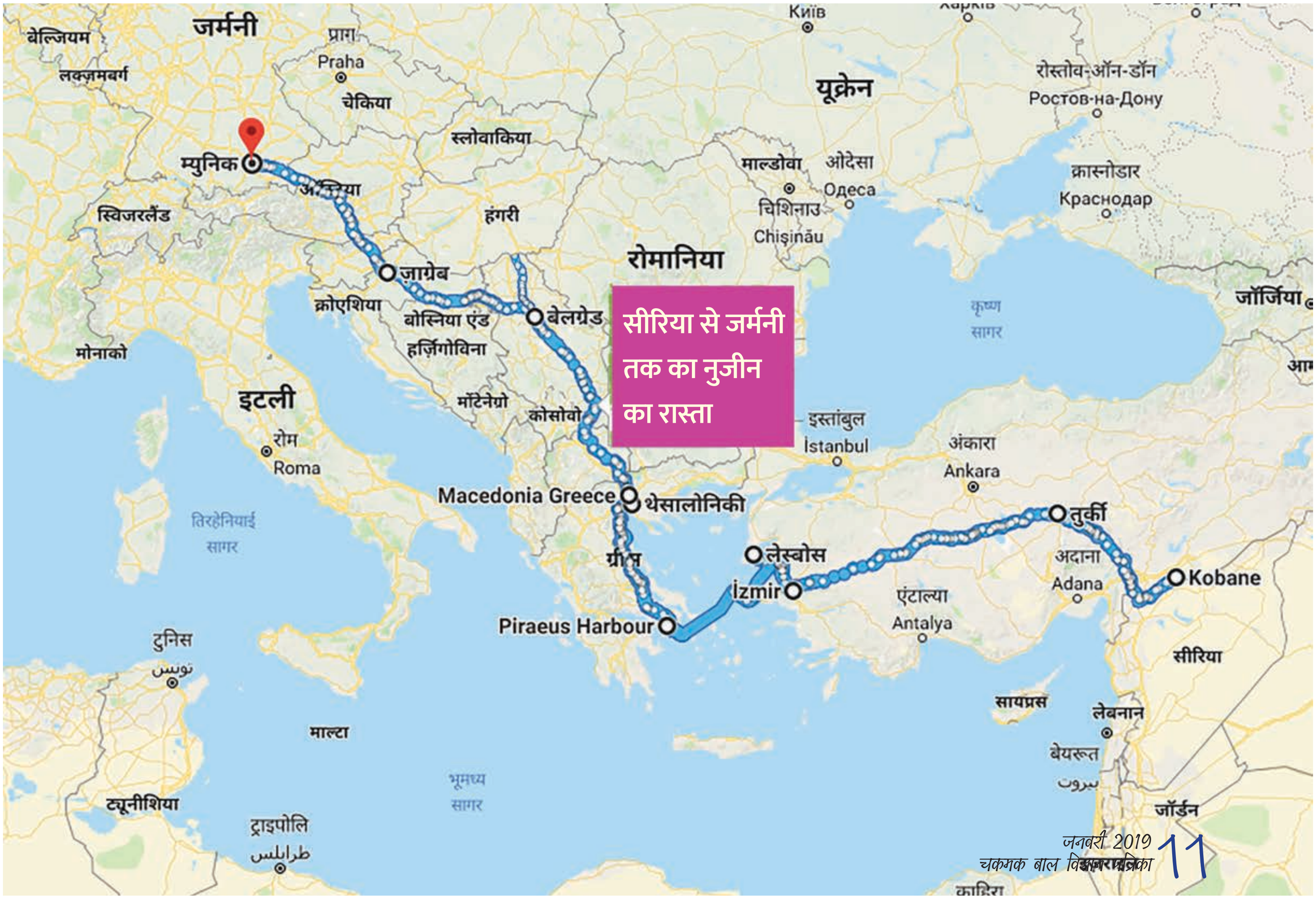

तुम भी जानो

कुछ बच्चे पेड़ दिखने में कैसे होते हैं यह किताबों से सीखते हैं। 5373 मीटर की ऊँचाई पर बसे तिब्बती पठार के पुमा जियाटैंग शहर के स्कूल के बच्चों की बात हो रही है। माउंट कुओमोलांगमा (एवरेस्ट) के बेस कैम्प से भी 200 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है यह प्राथमिक शाला। यहाँ इतनी ठण्ड होती है कि सर्दियों की छुट्टियाँ दो महीनों की होती है और गर्मियों की सिर्फ 2 हफ्तों की। और ये ट्री लाइन से भी ऊँचा है। यानी कि यहाँ पेड़ बिल्कुल भी नहीं होते हैं। यहाँ पले-बड़े बच्चे पेड़ों को सिर्फ किताबों से जान सकते हैं।

कुछ दिन पहले इंग्लैंड के अटलांटिक महासागर के किनारे एक प्लास्टिक की बोतल मिली। इसकी खबर दुनियाभर में फैल गई। बात यह थी कि यह बोतल जो नई की नई दिख रही थी लगभग 47 साल पुरानी थी। तुमने सुना या पढ़ा तो होगा ही कि कुछ प्लास्टिक को डीग्रेड होने में 450 साल भी लग सकते हैं। तो जब फेयरी लिक्विड, बरतन धोने के साबुन, की यह प्लास्टिक बोतल रेत पर मिली तो सब हैरान हो गए।

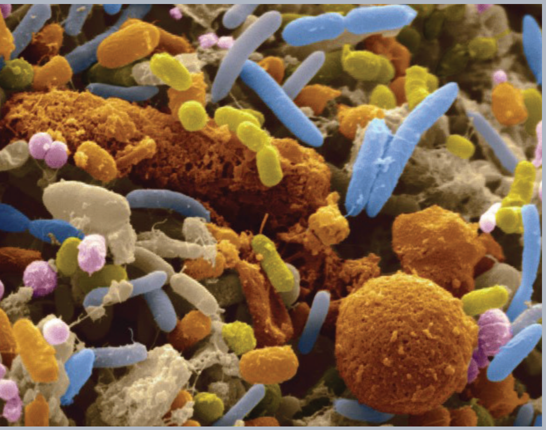

तुम्हारा शरीर कोशिकाओं से बना है। अलग-अलग किस्म की कोशिकाओं से बना है – मस्तिष्क की, चमड़ी की, दिल की, माँसपेशियों की और सबसे ज़्यादा तो रक्त की लाल कोशिकाएँ। ये कोशिकाएँ गिनती में लाखों में हैं। लेकिन हमारे शरीर में कुछ ऐसी कोशिकाएँ भी हैं जो बाहर से आई हैं। ये सूक्ष्मजीव कोशिकाएँ हैं। कहते हैं कि हमारे शरीर में लगभग उतने ही सूक्ष्मजीव हैं, जितनी हमारे शरीर की कोशिकाएँ। यानी कि लाखों सूक्ष्मजीव। ये ज़्यादातर हमारे आहार नली में रहते हैं, कुछ हमारे चमड़ी और अन्य अंगों में भी। यह भी कहते हैं कि एक बार पेट साफ कर लो तो इतने सारे सूक्ष्मजीव शरीर से निकल जाते हैं कि शरीर की कोशिकाओं का पक्ष ज़्यादा हो जाता है। लेकिन कुछ ही समय में बाकी के सूक्ष्मजीव प्रजनन कर अपनी तादाद फिर से बना लेते हैं।

सीटी बजाना लफंगों की हरकत मानी जाती है। तो तुम उन लोगों के बारे में क्या कहोगे जिनकी भाषा ही सीटियों की है। उत्तर अफ्रीका के पास कैनेरी द्वीपों के कुछ समुदाय सीटियों में भी एक-दूसरे से बतियाते हैं। परिवार के सदस्य इस पहाड़ी इलाके में एक-दूसरे से दूर अलग-अलग चट्टानों पर या वादियों के उस पार काम करते हैं। एक-दूसरे से सम्पर्क कैसे करें? उन्होंने सीटियों से 'बात' करना शुरू किया। सैकड़ों साल पहले ये यहाँ की आदिवासी भाषा पर आधारित थी। 15वीं सदी में स्पेन की फतह के बाद से यह स्पैनिश पर आधारित है। यहाँ के स्कूलों में तो सीटी बजाना अनिवार्य है!

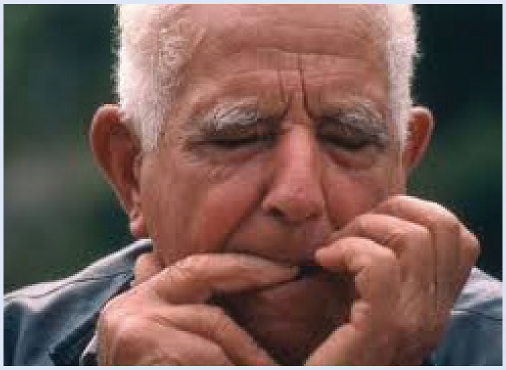

इन्दौर डायरी-2

तीन बहादुर और एक जीवन्त गवाह

दिलीप चिंचालकर

इन्दौर म्यूज़ियम में एक तोप रखी हुई है, जिसका नाम है फतेह मंसूर। इसके बारे में कहा जाता है कि 1 जुलाई 1857 में इससे दागे गए गोले से मालवा में अँग्रेज़ों के खिलाफ विद्रोह की शुरुआत हुई।

फतेह मंसूर तो गोला दागकर इतिहास में अपना नाम कर गई। उस मुठभेड़ में मिली चोट ने दो बहादुरों के भाग्य को पलटकर रख दिया। दो बिलकुल उल्टी दिशाओं में। एक को अपनी वफादारी का सिला सर्वोच्च सम्मान से मिला तो दूसरे को मिला मृत्युदण्ड।

सम्मान पाने वाला था अँग्रेज़ फौजी, कर्नल ट्रेवर्स। सज़ा पाने वाला था, होलकर फौज का रिसालदार सआदत खाँ।

किस्सा बहुत कुछ रायदत्त जमादार की आँखन देखी पर टिका हुआ है, जो सीतामऊ के वज़ीर साहब के रोज़नामचे में दर्ज़ है। 30 जून की रात इन्दौर में घनघोर वर्षा हुई थी। 1 जुलाई की सुबह तक मौसम साफ हो गया था। सूरज बाँस भर ऊपर चढ़ा ही था कि रायदत्त ने भूरे घोड़े पर सवार सआदत खाँ को पश्चिम से नदी पार कर रेसीडेंसी कोठी की ओर जाते देखा। सआदत होलकर की फौज में रिसालदार था। थोड़ी ही देर के बाद रेसीडेंसी की तरफ से पिस्तौल के धमाके की ज़ोरदार आवाज़ आई। पेड़ों से कबूतर निकलकर उड़ने लगे और पत्तों में छुपे चमगादड़ कर्कश शोर करने लगे।

रायदत्त वहीं अफीम गोदाम के पास एक बरगद की आड़ में खड़ा हो देखने लगा। (अफीम गोदाम इन्दौर जीपीओ के सामने की वही इमारत है जहाँ कुछ वर्षों पहले तक आयकर विभाग का दफ्तर था और अब लोक निर्माण विभाग का है।) सआदत खाँ के साथ सात-आठ घुड़सवार थे। गोदाम और रेसीडेंसी के बीच की खाली जगह में उन्होंने एक तोप को रेसीडेंसी की ओर मोड़कर खड़ा कर दिया।

सआदत खाँ उत्तेजित लग रहा था। उसके बड़बड़ाने में तैयार रहने, महाराजा के आदेश और साहबों को मार डालने जैसे शब्द सुनाई दे रहे थे। अचानक उसने हाथ का हरा झण्डा लहराया जिसे हुक्म मानकर तोपचियों ने एक भरपूर गोला रेसीडेंसी की दिशा में दाग दिया। यों पहली जुलाई सन् सत्तावन की सुबह करीब 8.20 पर फतेह मंसूर तोप ने पहला गोला दाग कर इन्दौर में सैनिक विद्रोह की शुरूआत की।

जैसे ही तोप चली, कर्नल ट्रेवर्स जो रेसीडेंसी में अँग्रेज़ों का सुरक्षा अधिकारी था, कहीं से चार सिख सवारों के साथ निकलकर सआदत खाँ की टुकड़ी पर झपटा। विद्रोहियों की गोलियों की परवाह किए बिना कर्नल ट्रेवर्स ने तलवार निकाल ली और सीधे सआदत खाँ से भिड़ गया। अँग्रेज़ अफसर देसी सिपाही पर भारी पड़ा। तलवार के कुछ ही हाथों में विद्रोही मुखिया घोड़े से गिर पड़ा। महज़ सौ गज़ की दूरी से देख रहे रायदत्त को यकीन था कि वह ज़ख्मी हो गया है।

इन्दौर की हालात पर एक पत्र
(5 जुलाई 1857)

...हफीज बक्सी का लड़का सहादत खां... चाहा-पानी के वक्त कोठी पर जाकर बड़े साहब सु कुछ सखत-कलामी की। जीसपर साहेब ने गाली दी वा तंमचा मारा, सो कान गाल पर छीलती गोली लगी। ईसने ... तलवार का वार किया, सो न जाने कीसका लगा? लोग कहें हें के कुछ बड़े साहेब के लगी मगर ख्याल में लगी मालुम पड़ी नहीं।

और फेर सहादत खां बाड़े में गया सो महाराज ने तीन बार सहादत खां को गोली से मार डालने का हुकंम दिया, सो सीपाहीयों ने गोली मारी नहीं, सो फेर साहादत खां को केद कर दीया। फेर रात के वकत उन तीनों कंपनीयों को उड़ा देने का हुकंम दीया के जीनों ने फसाद करा था, लेकीन फोज वालों ने हुकंम माना नहीं।

इन्दौर से मिर्जा वज़ीर बेग की चिट्ठी के कुछ अंश।

1856 से 1884 के बीच मिर्ज़ा वज़ीर बेग सीतामऊ के राजा को इन्दौर की खबर देने वाले कारिन्दा थे। वह रोज़ पत्र लिखकर हरकारे के हाथ खबरें अपने राजा के दीवान को पहुँचाते थे। इस पत्र में 1 जुलाई 1857 को हुए सआदत खाँ और अँग्रेज़ अफसर की मुठभेड़, जिसके परिणाम स्वरूप सआदत खाँ ने गोला दागा, का विवरण है।

साभारः रघुबीर सिंह, मालवा के महान विद्रोह कालीन अभिलेख

क्योंकि उसने कपड़े से अपने सिर पर कसकर पट्टा बाँध लिया था। मुठभेड़ जिस तरह अकस्मात शुरू हुई थी, खतम हो गई और ट्रेवर्स अपने साथी घुड़सवारों के साथ रेसीडेंसी की ओर लौट गया। बतौर यादगार मेवाती रिसालदार के हुलिए में दाढ़ी-मूछों के अलावा सिर पर एक घाव का निशान भी शामिल हो गया।

इतिहास में दर्ज़ है कि विद्रोहियों ने अँग्रेज़ों पर कहर ढाया। घण्टे भर बाद कर्नल ट्रेवर्स, रेसीडेंट हेनरी डूरेंड और उसके लवाजमे सहित होशंगाबाद होते हुए औरंगाबाद की ओर पलायन कर गया। चौथे दिन सआदत खाँ अपने सिपाहियों के साथ, दिल्ली की ओर निकल पड़ा। सिपाहियों के साथ सआदत खाँ का दिल्ली की ओर कूच करने का उद्देश्य ही मुगल सम्राट बहादुरशाह ज़फर के हाथ मज़बूत करना था।

एक जुलाई की इस घटना में कर्नल ट्रेवर्स की भूमिका को सर्वोच्च कोटी का पराक्रम माना गया। यह मानते हुए कि अपनी जान पर खेलकर विद्रोहियों को उलझाए रखने के कारण उसने अन्य अँग्रेज़ अफसरों को निकल भागने में सहायता की। 36 वर्षीय कर्नल जेम्स ट्रेवर्स को प्रतिष्ठत विक्टोरिया क्रॉस से सम्मानित किया गया।

सआदत खाँ दिल्ली तो नहीं पहुँच पाया। आगरा में ही अँग्रेज़ सेना ने उसे परास्त कर दिया और उसकी फौज बिखर गई। इसके बाद वह भेस बदलकर अलवर, उज्जैन, सलूंबर, बाँसवाड़ा में रहा। बहरहाल, एक जुलाई की घटना से माथे पर लगा तलवार का घाव ही सआदत खाँ के अन्त का कारण बना। वह 17 वर्ष बाद सिर की चोट के कारण पकड़ा गया। 1 अक्टूबर 1874 को सआदत खाँ को रेसीडेंसी में ही पेड़ पर लटकाकर फाँसी दे दी गई। न उसे होलकर महाराजा ने बचाया, न ही उसे अपने बेटे अहमद खाँ से मिलने दिया गया।

इस मुठभेड़ में तीन मुख्य पात्र रहे हैं। दो फौजी और एक तोप। मगर इनके अलावा एक और भी रहा है जिसका महत्व भी कम नहीं और वह आज भी जीवित है, उस घटना के चश्मदीद गवाह की तरह। जब रेसिडेंट डूरेंड की भागने की योजना बन रही थी तब उस रास्ते में बरगद का एक विशाल पेड़ आता था। किसी ने ट्रेवर्स को सूचना दी कि उस पेड़ की खोह में दस-पाँच हथियारबन्द बागी छुपे मिल सकते हैं। तुरन्त एक टुकड़ी भेज पड़ताल की गई। इस बिन्दु पर कोई जनहानि नहीं हुई पर दुश्मन का महत्वपूर्ण समय बिगाड़ने के लिए इस बरगद के पेड़ को स्वतंत्रता सेनानी मानकर ताम्रपत्र तो दिया जा सकता है।

बड़ा होने का एक फायदा...

उमा सुधीर
अंग्रेज़ी से अनुवाद - भरत त्रिपाठी

सर्दियों के शुरू होते ही मैं सोचने लगी कि खुद को गर्म कैसे रखा जाए और मुझे लगा कि इसके बारे में तुम्हारे लिए कुछ लिखना चाहिए। यह इसलिए क्योंकि ठण्ड से बच्चे (खास तौर से छोटे बच्चे) ज़्यादा प्रभावित होते हैं बनिस्बत बड़ों के।

वैसे किसी को कितनी ठण्ड या गर्मी लग रही है इस मामले में कई चीज़ों की भूमिका होती है। इनमें से शरीर का आयतन एक महत्वपूर्ण बात है। तो पहले मैं तुमको कुछ गणितीय तथ्यों के साथ बोर करूँगी ताकि छोटे बच्चों को ज़्यादा ठण्ड लगने वाली मेरी बात को मैं साबित कर सकूँ। इसका जवाब दरअसल आयतन और सतह के क्षेत्रफल (सरफेस एरिया) के बीच के सम्बन्ध में छिपा है। इसे हम घनाकार गुटकों (क्यूब) की मदद से समझ सकते हैं जिनकी सतह के क्षेत्रफल और आयतन को हम थोड़ी आसानी से निकाल सकते हैं।

सबसे पहले हम यह देखेंगे कि किसी घन के आयतन के साथ सतह का क्षेत्रफल कैसे बदलता है। इसको समझने के लिए अलग-अलग आकार के घन लो। ऐसे घन लो जिनकी भुजाओं का माप 1 सेंटीमीटर, 2 सेंटीमीटर, 3 सेंटीमीटर इत्यादि हो। हर घन की कुल सतह का क्षेत्रफल (सभी छह भुजाओं) और उनके आयतन की गणना करो (तालिका देखो)। फिर हर घन की सतह के क्षेत्रफल और आयतन की तुलना करो। यानी, सतह के क्षेत्रफल में आयतन से भाग दो।

जब किसी घन की भुजा 1 सेंटीमीटर होगी तो उसका सतह का क्षेत्रफल 6 वर्ग सेंटीमीटर होगा और आयतन 1 घन सेंटीमीटर। यानी इस घन की सतह का क्षेत्रफल उसके आयतन से संख्यात्मक रूप से छह गुना ज़्यादा होगा।

अगर एक घन जिसकी भुजा 2 सेंटीमीटर लम्बी हो, तो उसकी सतह का क्षेत्रफल 24 वर्ग सेंटीमीटर होगा और आयतन 8 घन सेंटीमीटर। सतह का क्षेत्रफल आयतन का तीन गुना होगा, और इसी तरह हम आगे बढ़ते जा सकते हैं।

जब भुजा की लम्बाई 4 सेंटीमीटर हो तो सतह का क्षेत्रफल आयतन का सिर्फ 1.5 गुना होगा। तो, अपेक्षाकृत कम आयतनों पर, प्रति इकाई आयतन, सतह का क्षेत्रफल ज़्यादा होगा। जीवों के लिए हम यह कह सकते हैं कि छोटे शरीरों में प्रति इकाई आयतन सतह का क्षेत्रफल ज़्यादा होता है। ये बात सभी जीवों पर लागू होती है, चाहे इन्सान हों या कोई अन्य जानवर हो, पौधे हों या कोई और।

अगर हम ठण्डी जगहों की ही बात करें तो इससे बड़े जानवरों को एक फायदा है। अगर तुम एक बड़े जानवर की छोटे जानवर से तुलना करो तो पाओगे कि छोटे जानवर के भीतर पैदा होने वाली गर्मी का बड़ा हिस्सा उसकी सतह से खो जाता है। इसीलिए मैंने शुरू में कहा था कि ठण्डे मौसम का असर बड़ों की अपेक्षा छोटे बच्चों पर ज़्यादा पड़ता है। हालाँकि इससे गर्म जगहों पर उनके शरीर को ठण्डा बने रहने में मदद मिलती है।

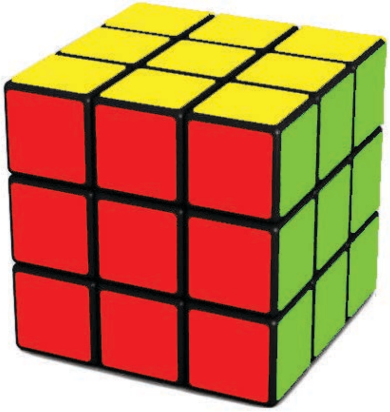

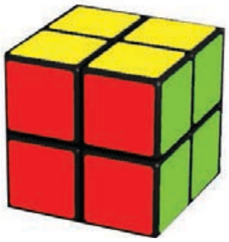

खैर, अगर बच्चों को ज़्यादा ठण्ड लगती है तो शिशुओं को तो और भी ज़्यादा लगेगी! और शिशुओं के साथ तो एक और समस्या होती है। उनके शरीर अपने तापमान को बहुत अच्छे से नियंत्रित नहीं कर पाते। इसलिए ठण्ड लगने पर उनके शरीर में उसी तरह कँपकँपी शुरू नहीं होती जैसी एक वयस्क के शरीर में हो जाती है। कँपकँपी से गर्मी पैदा होती है। इसलिए उन्हें पर्याप्त रूप से गर्म न रखने पर वे जल्दी ही निष्क्रिय होने लगते हैं, और जल्दी ही कुछ उपाय न करने पर यह स्थिति जानलेवा भी हो सकती है। पर वे हमें ये बता नहीं सकते कि उन्हें कब सर्दी लग रही है। तो ऐसे में हम क्या करते हैं? इस बात को जानने का, कि कब कोई -- चाहे कोई शिशु हो, बच्चे हों या बड़े -- पर्याप्त रूप से गर्म है कि नहीं, सबसे अच्छा तरीका है उनके हाथों या पैरों को छूकर देखना। जब हम ठण्डे होते हैं, तब हमारा शरीर जितनी गर्मी पैदा करता है उससे कहीं ज़्यादा हमारे शरीर की गर्मी आसपास के वातावरण में खो जाती है और हमारे हाथ-पैर ठण्डे हो जाते हैं। क्योंकि ऐसे में हमारी त्वचा और खास तौर पर हमारे हाथों और पैरों में रक्त संचार कम हो जाता है ताकि ऊष्मा का नुकसान कम से कम हो।

तो गर्म बने रहने का सबसे अच्छा तरीका क्या है? अगर आपके हाथ ठण्डे हैं तो बेहतर होगा कि आप एक और स्वेटर पहन लें! आपको दस्ताने पहनने की ज़रूरत नहीं है (जिन्हें पहनना काफी पीड़ादायी होता है अगर आप कोई ऐसा काम कर रहे हों जिसमें दक्षता की ज़रूरत हो, जैसे लिखना या चित्र बनाना)। हमारे यहाँ जैसी जलवायु रहती है उसमें आपको गर्म बने रहने के लिए बहुत महँगे किस्म के कपड़े पहनने की ज़रूरत नहीं होती (हाँ, अगर आप हिमालय की चोटियों में रह रहे हों तो ज़रूर ऐसे कपड़ों से आपको मदद मिल सकती है)। आपको तो शरीर पर बस एक परत और बढ़ा लेने से ही बहुत आराम मिल जाएगा फिर चाहे वह परत सूती ही हो, ऊनी न भी हो, क्योंकि असल में फर्क पड़ता है परतों के बीच हवा के फँस जाने से। हवा ऊष्मा की कुचालक जो होती है। तो अगर आपकी रजाई पुरानी और पतली पड़ गई है तो बस उसके साथ एक शीट जोड़ दीजिए और आपको अच्छी-खासी गर्मी मिल जाएगी। इससे मुझे एक सवाल याद आ रहा है जिसके साथ मैं इस लेख को खतम करूँगी -- अगर आपके पास एक फटा हुआ कम्बल है जिसमें छोटे-छोटे छेद हैं, और एक नया कम्बल है और इतनी ठण्ड पड़ रही है कि दो कम्बल ओढ़े जाएँ तो आप भीतर की तरफ या अपने शरीर से सटाकर कौन-सा कम्बल रखोगे – फटा हुआ या नया वाला?

तालिका: विभिन्न आकारों के गुटकों के सतह के क्षेत्रफल और आयतन का सम्बन्ध
(5, 6, और 7 से.मी. लम्बी भुजा का गणित तुम करके देखो...)

भुजा की लम्बाई (से.मी. में):	कुल सतह का क्षेत्रफल = 6 (लम्बाई x लम्बाई) (सें.मी.^{2} में)		आयतन = लम्बाई x लम्बाई x लम्बाई (सें.मी.^{3} में)		सतह का क्षेत्रफल और आयतन का अनुपात
1	6 (1 × 1) =	**6**	1 × 1 × 1 =	**1**	**6 : 1**
2	6 (2 × 2) =	**24**	2 × 2 × 2 =	**8**	24 : 8 = **3 : 1**
3	6 (3 × 3) =	**54**	3 × 3 × 3 =	**27**	54 : 27 = **2 : 1**
4	6 (4 × 4) =	**96**	4 × 4 × 4 =	**64**	96 : 64 = 3 : 2 = **1.5 : 1**

तुम भी बनाओ ...घोड़ा

मेरा घोड़ा

श्रीनाथ सिंह

चाचा की यह छड़ी नहीं है,
है यह मेरा घोड़ा।
जी चाहे तो तुम भी इस पर,
चढ़ सकते हो थोड़ा।
भूसा चारा दाना पानी,
एक न पीता खाता।
छोड़ मदरसा और गाँव में,
सभी जगह है जाता।

चाची को जब देखता है,
तब है अति दौड़ लगाता।
पर चाचा को देख जहाँ का,
तहाँ खड़ा रह जाता।
होती है घुड़दौड़ जहाँ पर,
आज वहीं है जाना।
इस घोड़े की करामात,
है दुनिया को दिखलाना।
हटो हटो, मत अड़ो राह में,
कहना मानो लल्ला।
नहीं तो लात लग जाएगी,
तो होगा नाहक हल्ला।

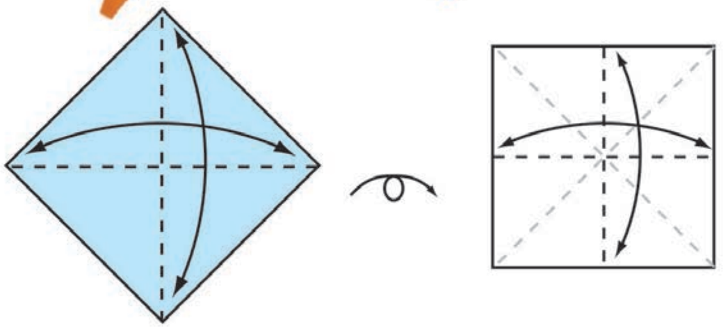

एक चौकोर कागज़ लो। उसकी एक तरफ को पेन या पेंसिल से रंगीन कर दो या फिर उस पर निशान लगा दो।

रंग वाला भाग ऊपर की तरफ रखो। चित्र में दिखाए तरीके से पहले एक भाग से कागज़ को आधा मोड़ो और फिर उसे खोलकर दूसरे भाग से मोड़ो।

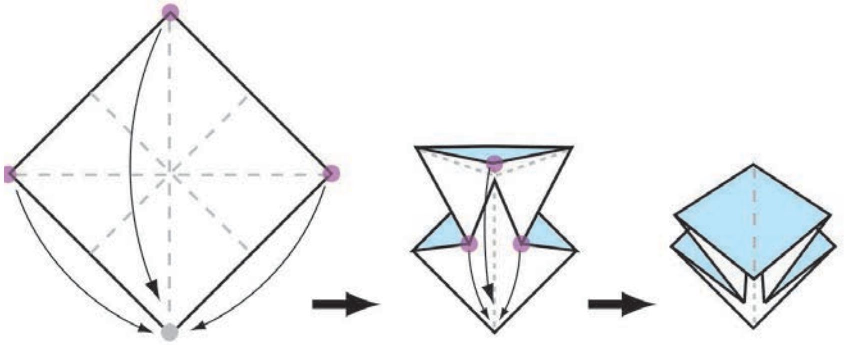

अब कागज़ का सफेद भाग ऊपर की तरफ रखो। एक तरफ से कागज़ को आधा मोड़ो और फिर खोल दो। अब दूसरी तरफ से भी मोड़ो और खोल दो। कागज़ में बनी लकीरें चित्र में जैसी दिख रहीं वैसी होनी चाहिए।

बनाई हुई लकीरों की मदद से, ऊपरी भाग के तीनों कोनों को नीचे के कोनों के साथ जोड़ दो।

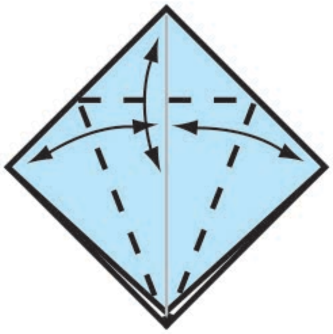

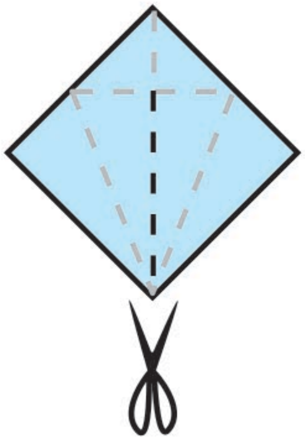

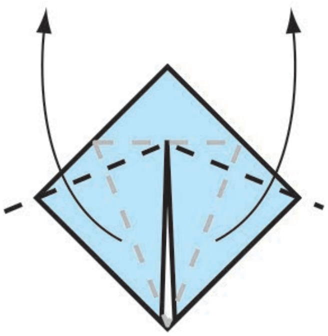

ऊपरी भाग के बाहर की तरफ निकले हुए कोनों को अन्दर बनी बीच की लकीर में लाकर जोड़ो। ऊपरी भाग को भी नीचे की ओर मोड़ो। अब इन मोड़ों को खोलोगे तो तुम्हें चित्र में जैसी लकीरें हैं वैसी लकीरें दिखाई देंगी।

ऊपरी भाग में बनी बीच की लकीर को काट लो। ध्यान रखना कि जो ऊपर की लकीर है सिर्फ वहीं तक काटना है। मदद के लिए चित्र देखो।

इन दो भागों को ऊपर की तरफ मोड़ो।

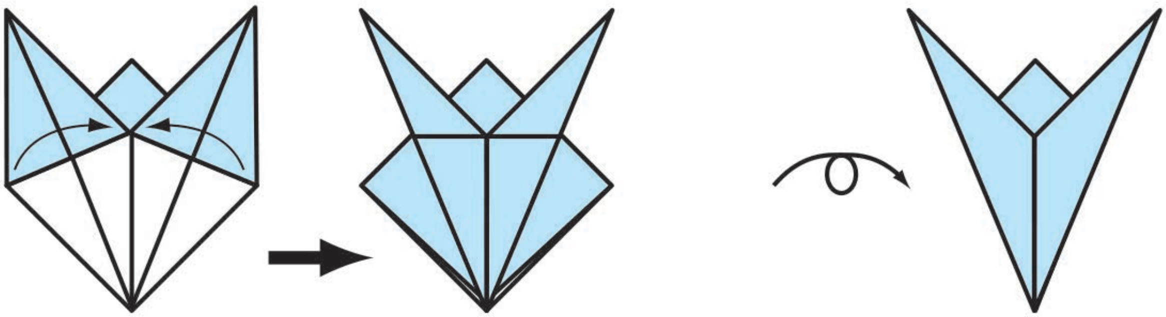

बाहरी तरफ निकले हुए भाग को अन्दर की ओर मोड़ दो।

अब नीचले भाग को पलटकर स्टेप 4 से लेकर स्टेप 7 तक दोहराओ। आपका मॉडल चित्र में दिखाए मॉडल जैसे दिखेगा।

मॉडल को उल्टा करो। चित्र में दिखाए तरीके से मोड़ो। बस बन गया घोड़ा।

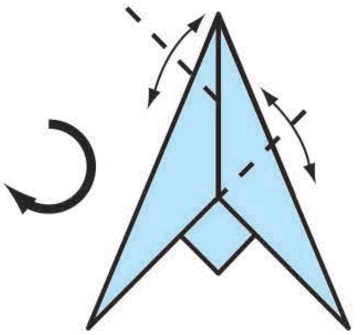

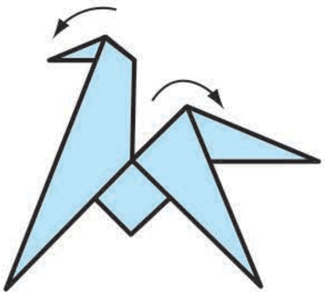

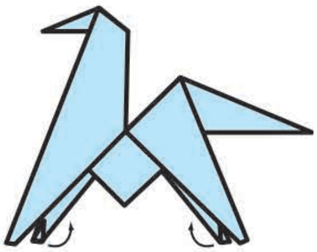

टेलीस्कोप

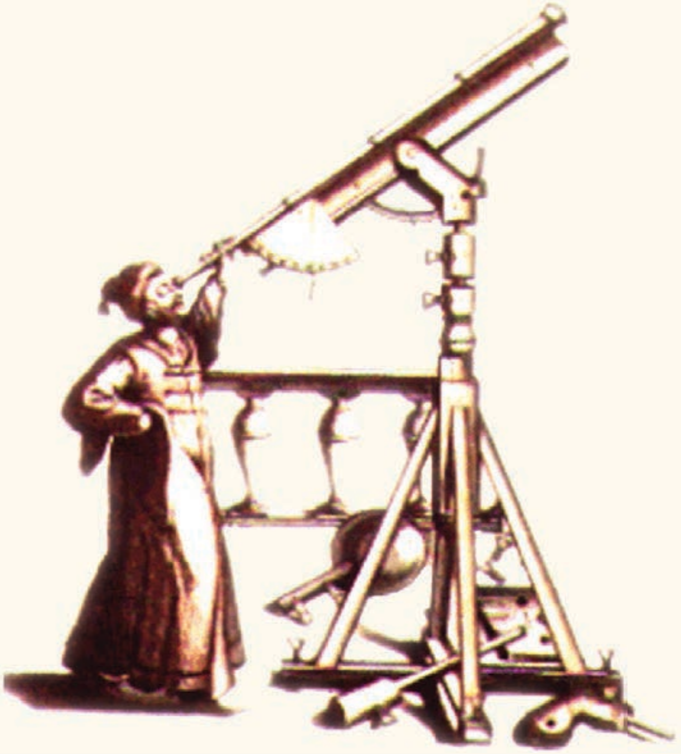

अनिल धीमान

टेलीस्कोप का नाम सुनते ही हमारे दिमाग में विभिन्न तरह की आकृतियाँ उभरने लगती हैं। अकसर हम टेलीस्कोप और माइक्रोस्कोप में अन्तर को जानने में गलती कर देते हैं। यह इसलिए भी होता है क्योंकि हम टेलीस्कोप से सही मायनों में परिचित नहीं हैं।

टेलीस्कोप किसने बनाया? इसका सीधा-सीधा जवाब है गैलीलियो ने जो कि सही नहीं है। आज से लगभग 400 वर्ष पहले 1609 में गैलीलियो गैलिली ने पहले से आविष्कृत हो चुके टेलीस्कोप को अपने हिसाब से तैयार कर सबसे पहले आकाश के पिण्डों को देखा। उनके बारे में दुनिया को बताया कि ब्रह्माण्ड में और भी ग्रह हैं जो अलग तरह से दिखाई देते हैं। गैलीलियो ने बृहस्पति और शनि ग्रह को देखकर उनके बारे में जानकारी इकट्ठा की और हाथ से रेखाचित्र बनाए।

तेरहवीं शताब्दी के लगभग चश्मे का उपयोग होने लगा था। यह जानकर अजीब भी लगता है कि उस वक्त के चश्मे या तो एक आँख पर लगाए जाते थे या उन्हें हाथों से पकड़कर पढ़ने का काम किया जाता था। चश्मे को इससे पहले 'रीडिंग स्टोन' भी कहा जाता था। ये चाबी के छल्ले जैसी आकृति के होते थे। पढ़ने वाले इनको कागज़ पर रखकर उपयोग करते थे। पता नहीं कब लेकिन अगले सौ साल में किसी ने तो दो चश्मों को एक के पीछे एक रखकर समझ लिया था कि इनसे काफी दूर की चीज़ें देखी जा सकती हैं।

टेलीस्कोप को बनाने का श्रेय हॉलैंड के एक चश्मा बनाने वाले को दिया जाता है। हान्स लिपरहे ने अपने इस आविष्कार को 1608 में पेटेंट कराने की बहुत कोशिश की

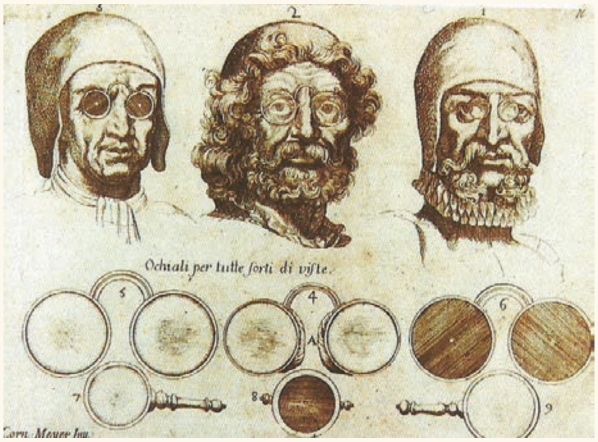

गैलीलियो का टेलीस्कोप

लेकिन वो इसमें सफल नहीं हो सके। इस बीच पूरे यूरोप में खबर तो थी कि ऐसा कोई यंत्र बनाया गया है जिससे दूर की चीज़ पास देखी जा सकती है। और इस खबर का पता चलते ही गैलीलियो ने अपना टेलीस्कोप बना लिया।

उस वक्त टेलीस्कोप में लैंस की क्षमता लगभग आठ आवर्धन तक ही थी, लेकिन गैलीलियो ने लैंस की आवर्धन क्षमता को बढ़ा दिया जिससे टेलीस्कोप की मदद से आकाश के अनेकों रहस्यों को खोला जा सका।

वैसे टेलीस्कोप का शुरुआती उपयोग सिर्फ आसमान पर ही नहीं, धरती पर नज़र रखने के लिए भी किया जाता था। सेनाएँ इनका उपयोग राज्य की सीमा की सुरक्षा के लिए करती थीं। इसे समुद्री जहाज़ों में भी उपयोग में लाया जाने लगा था। तब दुनिया को इस सामान्य से दिखने वाले यंत्र की पूरी ताकत का पता नहीं था। लेकिन उस वक्त इसका उपयोग जीवन का ज़रूरी हिस्सा बन चुका था और धीरे-धीरे यह यंत्र दुनियाभर में प्रचलित हो गया।

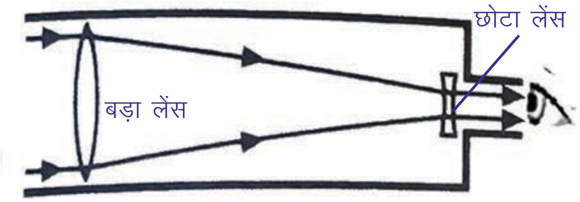

गैलीलियो टेलीस्कोप

टेलीस्कोप दो तरह के होते हैं। एक में लैंस का उपयोग होता है और दूसरे में दर्पण का। पहले यह देख लेते हैं कि लैंस और दर्पण में क्या फर्क है। गैलीलियो ने जिस टेलीस्कोप को परिष्कृत कर खगोल विज्ञान की दुनिया में खोज को आगे बढ़ाया उसमें लैंस का इस्तेमाल किया गया था। इस प्रकार के टेलीस्कोप में पारदर्शी लैंस उपयोग किए जाते हैं जो एक गोल-सी नली में लगते हैं। आगे का लैंस बड़ा और पीछे का छोटा होता है। हमारी आँखें किसी भी चीज़ को तब देख पाती हैं जब उससे टकराकर कुछ न्यूनतम प्रकाश हमारी आँखों पर पड़ता है। किसी भी चीज़ से प्रकाश दूरी के साथ फैलता है। बड़ा लैंस इस प्रकाश को बटोरकर टेलीस्कोप में केन्द्रित करता है। उस चीज़ का प्रतिबिम्ब बहुत छोटा होता है। अन्दर का लैंस प्रतिबिम्ब को बड़ा कर देता है ताकि हम उसे देख सकें।

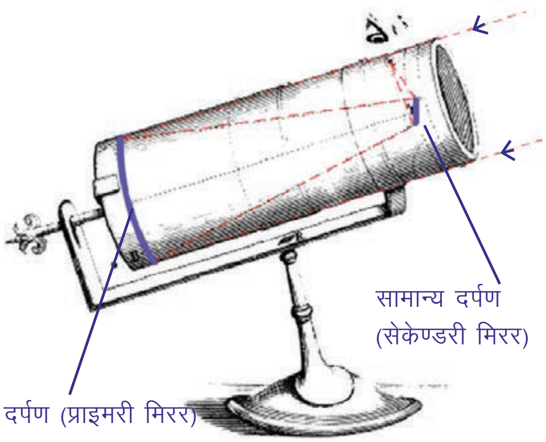

न्यूटन टेलीस्कोप

वहीं दूसरी और न्यूटन द्वारा बनाए गए टेलीस्कोप में लैंस की बजाय दर्पण (जिसे मुख्य दर्पण या प्राइमरी मिरर कहते हैं) का उपयोग होता है। यह दर्पण प्रकाश को बटोरने का काम करता है। दर्पण को एक तरफ से ही घिसा जाता है – उभरा हुआ या अन्दर की ओर गहरा। इस सतह पर सिल्वर या एल्यूमीनियम की परत चढ़ा दी जाती है। इसमें और भी चीज़ें चढ़ाई जाती हैं जिनके बारे में तुम पता कर सकते हो। यह पारदर्शी नहीं होता है बल्कि घर में लगने वाले सामान्य आईने की तरह होता है। इससे परावर्तित होकर प्रकाश दूसरी ओर लगे सामान्य (सेकंडरी मिरर) दर्पण पर जाकर गिरता है। वहाँ से फिर परावर्तित होता है और एक लैंस पर जा गिरता है। दर्पण के इस्तेमाल का फायदा यह है कि इन्हें काफी बड़ा बनाया जा सकता है यानी कि दूर कायनात की तरफ हम अपनी नज़रें घुमा सकते हैं।

बड़े टेलीस्कोप

सत्रहवीं शताब्दी तक दुनिया में बड़े टेलीस्कोप बनाए जा चुके थे, जिनका उपयोग खगोलीय घटनाओं के लिए किया जाने लगा था। हमारे देश में टेलीस्कोप के आगमन के लगभग 200 वर्ष पूरे हो चुके हैं। ब्रिटिश शासन के दौरान कई वेधशालाओं का निर्माण किया जा चुका था। 1792 में एगमोर (चेन्नई), 1826 में कोलाबा (मुम्बई), 1899 में कोडाईकेनाल (तमिलनाडु) में और 1947 में आज़ादी के बाद 1954 में ऐरीस नैनीताल, 1986 में वेनूबापू कावलूर (तमिलनाडु), 1998 में देवस्थली नैनीताल और 2001 में हेनले लेह लद्दाख में बड़ी खगोलीय वेधशाला स्थापित की गईं।

यहाँ लगे सभी टेलीस्कोप 12 इंच से 3.6 मीटर डायमीटर के हैं (सामान्य टेलीस्कोप 2-3 इंच चौड़े होते हैं)। ये काफी महँगे हैं और ऐसे स्थानों में लगाए गए हैं जहाँ रात के समय में आकाश साफ रहे और किसी भी तरह का अप्राकृतिक प्रकाश न आता हो। यानी जहाँ बहुत अँधेरा रहता हो, धूल-मिट्टी भी न उड़ती हो और जो इन्सानी बस्ती से दूर हो। इसलिए दुनिया में जितने भी बड़े टेलीस्कोप लगे हैं वो ऊँचे पहाड़ों पर ही स्थापित किए गए हैं। कुछ टेलीस्कोप तो धरती से लगभग 600 किलोमीटर दूर अन्तरिक्ष में भी स्थापित हैं।

टेलीस्कोप से आज हम हमारे सौरमण्डल के बाहर तक की जानकारी हासिल कर चुके हैं। हमारे सौरमण्डल की तरह ही और भी कई सौरमण्डल हैं। वहाँ क्या है, वहाँ जीवन है या नहीं, अभी इनका पता लगाना बाकी है। हम हमारे सौरमण्डल को ही ठीक से जान नहीं पाए क्योंकि वहाँ जाना आसान नहीं है। इसके लिए टेलीस्कोप को और ज़्यादा बड़ा बनाया जा रहा है ताकि हम धरती पर रहते हुए अन्तरिक्ष की गहराइयों को ठीक से जान पाएँ।

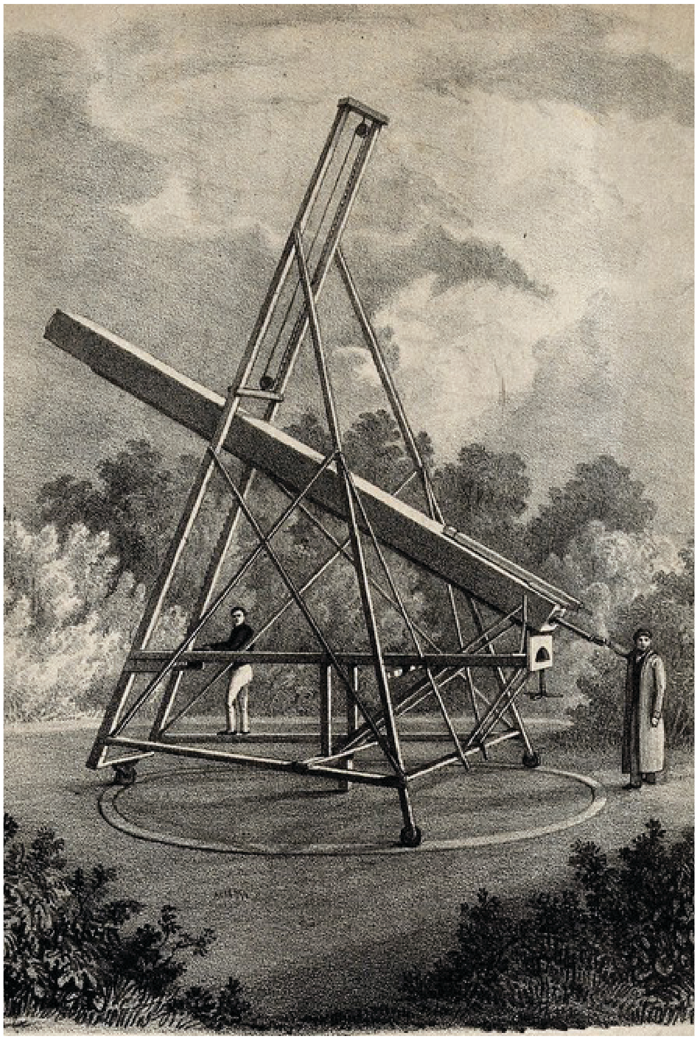

क्लैपहम, इंगलैंड में एक बड़े टेलेस्कोप का निर्माण, 1837।

वर्तमान में दुनिया में 30 मीटर के मुख्य दर्पण का निर्माण चल रहा है जिसे TMT के नाम से जाना जाता है। इसे अमरीका के द्वीप हवाई पर स्थापित किया जा रहा है। इस निर्माण अभियान में अमरीका, कनाडा, चीन, जापान और भारत शामिल हैं। पुणे, बेंगलुरु और नैनीताल की तीन वैज्ञानिक संस्थाओं में इस टेलीस्कोप से सम्बन्धित सामान और सॉफ्टवेयर तैयार किए जा रहे हैं। 2027 में सम्भवतः इस टेलीस्कोप को शुरू किया जा सकता है जिसके बाद हम ब्रह्माण्ड को और अच्छे से जान पाएँगे।

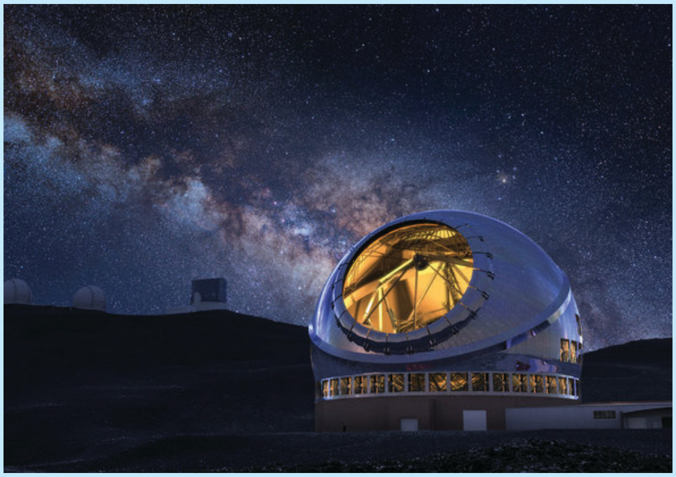

सोचो अगर टेलीस्कोप नहीं होता तो कैसा होता ?

सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करो और नए लोगों से घुलो-मिलो।

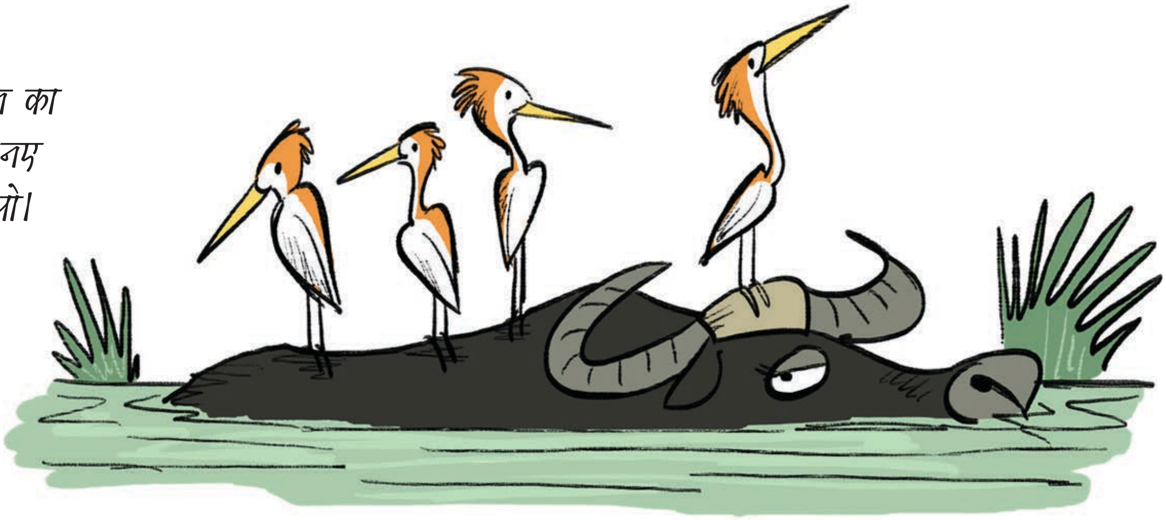

सुर्खिया बगला

पीने का पानी घर से लेकर निकलो, प्लास्टिक की बोतलें कम इस्तेमाल करो।

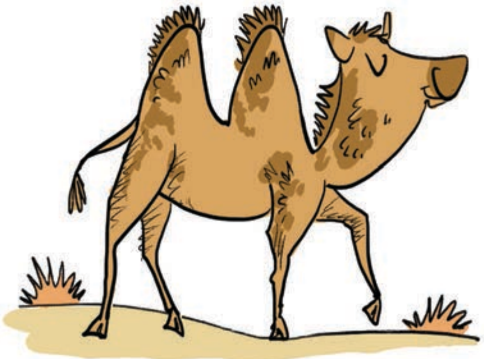

दोकुबड़ी ऊँट

प्राकृतिक चीज़ों से खुद को सजाओ।

बारहसिंगा

बाज़ार जा रहे हो? थैला साथ लेकर जाओ।

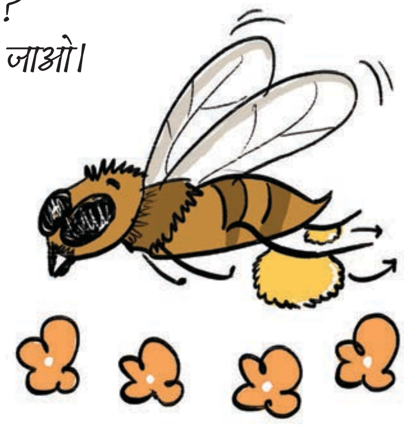

भारतीय मधुमक्खी

अपने बगीचे में अपना खाना खुद उगाओ।

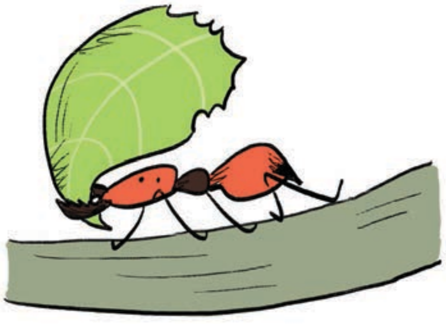

पत्ते काटने वाली चींटी

जंगली जानवरों से तुम्हारे लिए नए साल के कुछ संकल्प...

रोहन चक्रवर्ती

कबाड़ से नई चीज़ें बनाओ
और अपना घर सजाओ।

वोगेलकॉप बॉवरबर्ड

स्ट्रॉ हटाओ, गटागट पी जाओ।

टोपीधारी बन्दर

स्ट्रा बिना काम न चले,
तो अपनी स्ट्रॉ का इस्तेमाल बार-बार करो।

बैंगनी शकरखोरा

एक ज़िम्मेदार मछली खाने वाले बनो, प्रजनन के महीनों में उन्हें मत खाओ।

मुलायम त्वचावरण वाला ऊदबिलाव

किसी और के पहने हुए कपड़े हैं तो क्या हुआ, यह टिकाऊ फैशन है।

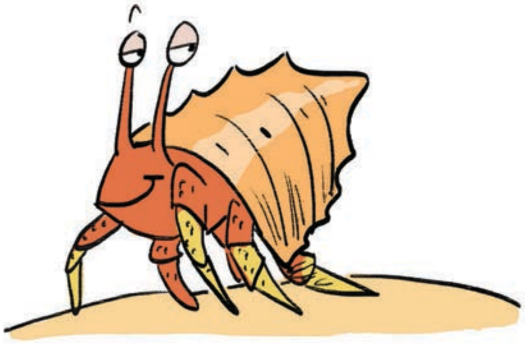

एकाकी केकड़ा

ऊँच-नीच का पापड़ा, ऊँच माँगो नीच?

चित्र व कहानी
कनक शशि

आज स्कूल में आठवीं की एक लड़की के पास से एक चिट्ठी मिली, जो किसी लड़के ने उसे लिखी थी। बस इसी बात से सारे स्कूल में कोहराम मचा हुआ था। बड़ी मैडम ने सारे शिक्षकों की आपातकालीन मीटिंग बुलाई थी। इस कारण आधी छुट्टी के बाद के सारे पीरियड कैंसिल हो गए। गुठली और उसके दोस्तों की तो मौज़ हो आई थी। किताबों को बैट बनाकर कोई क्रिकेट खेल रहा था तो कोई बैडमिंटन। कोई कागज़ के हवाई जहाज़ उड़ा रहा था, तो कोई फिल्मी गानों पर नाच रहा था। कुल मिलाकर क्लास में गदर मचा हुआ था।

तभी वन्दना मैडम आईं, ज़ोर से डस्टर मेज़ पर पटका। सब फौरन अपने सारे महत्वपूर्ण काम छोड़कर अपनी-अपनी जगह जाकर खड़े हो गए। हुडदंग मचाने पर हमेशा की तरह का उनका भाषण शुरू हुआ, पर जल्दी खतम हो गया। फिर मैडम ने कहा, "आज बड़ी मैडम ने कुछ नए नियम बनाए हैं, जिनका पालन सभी को करना होगा। जिसने नहीं किया उसकी खबर खुद बड़ी मैडम लेंगी।"

नियम 1 – स्कूल में लड़के-लड़कियाँ अलग-अलग बैठेंगे, आधी छुट्टी में अलग-अलग खेलेंगे और अलग-अलग खाना खाएँगे।

नियम 2 – छुट्टी होने पर लड़कियाँ अपने घर के आसपास रहने वाली लड़कियों के साथ घर जाएँगी, चाहे वे अलग-अलग कक्षा में ही क्यों न पढ़ती हों।

नियम 3 – लड़के-लड़कियाँ ना ही आपस में कॉपी-किताब बदलेंगे, ना ही बात करेंगे।

इतना सुनते ही सारी क्लास में खुसर-पुसर शुरू हो गई, कई हाथ सवाल पूछने के लिए हवा में उछले। मैडम ने गुठली को इशारा किया। गुठली ने कहा, "मैडम, ऋषि और अब्दुल मेरे पड़ोस में रहते है, तो एक ही रास्ते पर हम अलग-अलग कैसे जाएँगे?" मैडम – "गुठली, ये बड़ी मैडम का सख्त आदेश है, लड़के भले ही तुम्हारे दोस्त या पड़ोसी हों पर घर तो तुम्हें आसपास रहने वाली लड़कियों के साथ ही जाना होगा।"

"पर मैडम,...।"

मैडम – "गुठली कोई पर-वर नहीं, स्कूल से घर पहुँचने के बाद तुम किससे दोस्ती रखती हो, तुम किसके साथ खेलती हो, घूमती हो इससे हमें कोई वास्ता नहीं। मगर स्कूल में कुछ ऊँच-नीच हो गई तो?"

इतने में छुट्टी की घण्टी बज गई। आज छुट्टी की घण्टी, उत्साह से ज़्यादा उलझन भरी थी। गुठली ने सोचा था कि आज भी ऋषि और अब्दुल के साथ सब्जी मण्डी जाएगी, वहाँ गोलमटोल पिल्लों के साथ खेलेगी, शायद एक को उठाकर घर भी ले आती।

"चलो गुठली मैडम," दीदी की आवाज़ आई, "हम तुम्हारे लिए यहाँ सारा दिन खड़ी नहीं रहेंगी।" फिर अपनी सहेली से बोली, "क्या मुसीबत है, अब ये बच्ची हम पर थोप दी है। घर पर तो घर पर, अब स्कूल में भी ये ज़िम्मेदारी सम्हालो...।" गुठली मन ही मन बोली, "मुझे भी कहाँ शौक है तुम दादियों के साथ घर जाने में?" आगे कोने में ऋषि और अब्दुल दिखे, गुठली ने धीरे-से हाथ हिलाया और दोनों चल दिए। एक ही रास्ते पर अलग-अलग जाने को गुठली मन मसोस कर रह गयी।

दीदियाँ चल दीं, उनके पीछे पैर घसीटते हुए गुठली भी। वह उनकी बोरिंग बातें सुनने लगी। दीदी 1 – "ये सारी मुसीबत उस आठवीं की लड़की के कारण हुई है, बेवकूफ!" दीदी 2 – "हो सकता है किसी ने चुपचाप उसके बैग में डाल दी हो।" दीदी 1 – "तो भी, अगर किसी ने दी भी तो पढ़कर फाड़ देती या कहीं छुपा देती। मैंने तो अपनी चिट्ठी मैडम को आता देख खा ली थी, हा हा हा हा।" दोनों ज़ोर से हँसी, गुठली की भी हँसी निकल गई। ये देख दीदी 1 ने पूछा, "क्यों री गुठली, कहीं तुझे भी तो कोई चिट्ठी नहीं मिली, हा हा हा हा।" दोनों फिर ज़ोर से हँस दीं।

तभी गुठली की गली आ गई, गुठली ज़ोर से घर की तरफ भागी। मामा रोज़ की तरह सो रहे थे, नानी दाल-चावल बनाकर रख गई थीं। गुठली ने झटपट नींबू का अचार निकाला और खाने बैठ गई। दिमाग में आज के दिन की घटनाएँ ही चल रही थीं। “आखिर क्या हो गया अगर किसी ने किसी को चिट्ठी लिख दी? नानी और मैं भी तो मम्मी को चिट्ठी लिखते हैं, और मम्मी कितनी तारीफ करती हैं हमारी चिट्ठियों की।

तभी आँगन में बरतन खनके। "बेजंती जीजी!" गुठली भागी। 15-16 साल की बेजंती जीजी गुठली की दोस्त है। वो नानी के घर के बरतनों की सफाई का काम करती है। "जीजी।" "हाँ गुठलीबाई, का हो गओ आज," बेजंती जीजी बोली। "जीजी, मालूम बताऊँ है ना..." और गुठली ने सारी कथा जीजी को कह सुनाई। फिर पूछा, “जीजी, ये ऊँच-नीच क्या होता है?"

"बाई, जब मोड़ा मोड़ी के संगे कछु गलत करत है तो ऊँच-नीच हो जात है," बेजंती बोली। गुठली, "पर...।" तभी बाजूवाली छत से गुड्डू भैया चिल्लाए, "बेजंती, जाते-जाते इधर होकर जाना।" उस ओर देखे बिना ही बरतनों को ज़ोर से रगड़ती हुई बेजंती बड़बड़ाई, "... घरवाले बाहर गए हैं, जई मद्दे टेर रओ है।" उसे अनसुना कर, "बताओ न जीजी," गुठली अपने ही सवाल पर अड़ी थी। “अरे मोड़ी, ऊँच-नीच बाहे कहत हैं, जब कोऊ मुरहऊ को पेट फूल जात है, बा माँ बन जात है।" झुंझलाहट के साथ बेजंती बोली, "चल अब, कल मिलहें, और जो नासपीटा फिर से टेरे तो कह दइय्यो कि मर गई बेजंती।"

गुठली गेट पर ही खड़ी थी कि नानी का रिक्शा आ गया। नानी बोलीं, "काय बउ अबे तक कपड़े नई बदले...।" गुठली नानी से लिपट गई, उसे नानी की सौंधी-सी खुशबू बहुत भाती थी। तम्बाकूवाला पान, बालों में लगा तेल, नरम सूती साड़ी और हल्की-सी मुस्कान जो मिल-जुलकर नानी बन जाती थी।

नानी ने चाय बनाई, दोनों चाय की चुस्कियाँ लेने लगीं। नानी ने मुस्कराते हुए पूछा, "आज का हो गओ? मुत्केरे सवाल दिखत हैं पिटारे में।" गुठली ने सारा माज़रा नानी को बताया और पूछा, "मँझली मौसी को बच्चा होने वाला है तो क्या उनके साथ ऊँच-नीच हो गई है?" नानी हँसी और कहा, "नहीं मुरहऊ, बिनकी तो शादी हो गई है, और जो मोड़ी शादी से पहले कोऊ मोड़ा से प्रेम करे, और पेट से हो जाए बा कहूं की नई रए। मोड़े तो मोड़े हैं, बिनको कछु नई बिगड़े, पर मुरहऊ तो बदनाम हो जात है, जई है ऊँच-नीच। जई काजे मोड़ियों हें सम्हलकर रउओ चईए।" कहते-कहते नानी गम्भीर हो गईं। गुठली पूछना तो बहुत कुछ चाहती थी पर नानी की गम्भीरता ने बातचीत पर विराम लगा दिया था। "प्रेम से लड़की माँ बन जाती है, स्कूल में बदनाम हो जाती है? एक चिट्ठी से इतना सब हो जाता है।"

इतने में अब्दुल की आवाज़ आई, "गुठली ऐ गुठली!" गुठली बाहर भागी, सभी बच्चे नदी-पहाड़ खेल रहे थे और ज़ोर-ज़ोर से गा रहे थे, ऊँच-नीच का पापड़ा, ऊँच-नीच का पापड़ा, ऊँच माँगो नीच?" गुठली चिल्लाई, "नीच!"

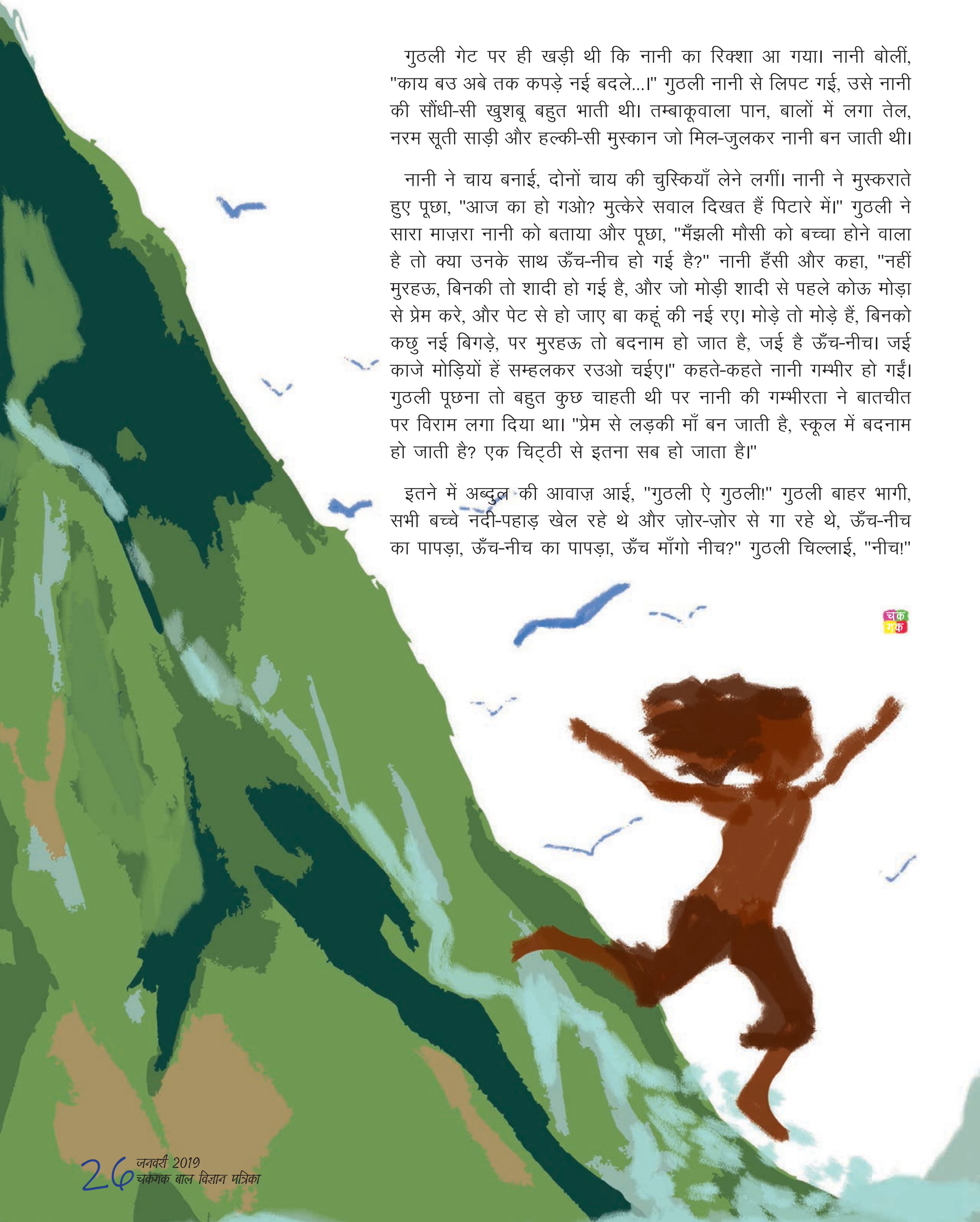

जवाब - कहानी पूरी करो

नवम्बर अंक में हमने आनन्द और बिहू द्वारा लिखी एक कहानी शुरू की थी, जिसे तुम्हें पूरा करना था। कई स्कूलों और संस्थाओं से हमें जवाब मिले। चौथी से लेकर दसवीं कक्षा के बच्चों ने छोटी-लम्बी मज़ेदार कहानियाँ हमें लिखकर भेजीं। हमारे पास तुम्हारी 130 से भी ज़्यादा कहानियाँ आई हैं। हमने तो सारी कहानियाँ पढ़ीं और हमें बहुत मज़ा आया। उन कहानियों में से कुछ यहाँ छाप रहे हैं। इनमें से तुम्हें कौन-सी अच्छी लगी हमें ज़रूर बताना।

हमने जो कहानी पूरी करने को दी थी वो थी...

शाम का समय था। गर्मी के दिन थे इसीलिए चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। मैं अपने बिस्तर पर बैठकर अपने दोस्तों के बारे में सोच रही थी कि अभी तक वे क्यों नहीं आए। तभी मम्मी की आवाज़ आई, "रूमाना, तुम्हारे दोस्त आए हैं। तुम्हें खेलने के लिए बुला रहे हैं।"

मैंने अपना बैट उठाया और तुरन्त उनके साथ खेलने भाग गई। हमने आम के बगीचे में जाकर खेलना शुरू कर दिया। बगीचे के बीचों-बीच एक खाली जगह थी। हम अकसर वहीं खेला करते थे। हम खेल ही रहे थे कि रेहान ने एक ज़ोरदार शॉट मारा। बॉल झाड़ियों में चली गई। मैं बॉल उठाने झाड़ियों में गई। मैं बॉल ढूँढ ही रही थी कि मैंने देखा...

...बॉल आम के पेड़ के पीछे थी पर वहाँ एक छोटा शेर का बच्चा बैठा था। वह अपनी माँ से बिछड़ गया था। मैंने वह शेर का बच्चा अपने दोस्तों को दिखाया। सब दोस्त मिलकर उस बच्चे को मेरे घर ले गए। कई दिनों तक वह बच्चा यहीं पर रहा लेकिन एक दिन जब यह बात मेरे पड़ोस में रहने वाली शाइना को पता चली तो उसने जू वालों को फोन करके बुला लिया। वे उस बच्चे को लेकर जाने लगे। हम सब दोस्तों ने बहुत ज़ोर लगाया कि वह बच्चा जू जाने से रुक जाए लेकिन वह उसको नहीं रोक पाए। वे पार्क के रास्ते जू जा रहे थे तभी वहाँ एक विशाल शेरनी आ गई, उसने उन जू वालों से शेर का बच्चा लिया और दोनों भागकर जंगल की तरफ चले गए। दोनों खुशी-खुशी रहने लगे ।

अंकित, सातवीं, जे.आर.एन. दीपालया स्कूल, दिल्ली

• • • • • • • • • • • • • • • • •

...वहाँ गेंद के पास एक बड़ा साँप लेटा हुआ था। मुझे लगा कि वह मरा हुआ है। फिर मुझे लगा कि वह सोया हुआ है। फिर मुझे लगा कि वह धूप सेंक रहा है। मैंने आसमान की ओर देखा। सूरज जा चुका था। मैं चुपचाप लौट आई। मैंने सबको बताया। रेहान एक लट्ठा उठा लाया। वह धीरे-धीरे साँप के पास जाने लगा। छटाक की आवाज हुई तो साँप सरकता हुआ घास में कहीं छिप गया। रेहान से लट्ठा छूटकर गिर पड़ा था। मैंने बॉल उठा ली थी। सूरज डूबने लगा था। हम घर लौटने लगे। मैंने रेहान से कहा, "मुझे पता है। तू लट्ठ से साँप को मारना चाहता था न?"

रेहान ने जवाब दिया, "नहीं रे। मैं तो लट्ठ से उसके पास पड़ी बॉल उठाना चाह रहा था। उसे बिना नुकसान पहुँचाए भी तो हमें हमारी बॉल मिल सकती थी।"

मैं सोचने लगी, "ये तो मैंने सोचा ही नहीं।" सूरज डूब चुका था। साँप सोच रहा होगा कि हम उसे लट्ठ से मारने आए थे। मैं यही सोच रही हूँ।

दीपा, आठवीं, राजकीय हाई स्कूल, भितांई, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

• • • • • • • • • • • • • • • • •

...चारों तरफ तेज़ी से हवा चलने लगी। मैंने एक जादूगरनी परी देखी और मैंने उस परी से बात की। मैंने कहा, "तुम कहाँ से आई हो?"

उसने कहा, "मैं आसमान में उडती हूँ, मैं बादलों से फिसलकर यहाँ आ गई। तुम कौन हो? मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा?"

"मेरा नाम रूमाना है, मैं यहाँ बैट-बॉल खेल रही थी। तुमने मेरा बॉल देखा है?"

परी ने कहा, "नहीं।"

रूमाना ने कहा, "तुम मेरे को बादलों में ले चलोगी?"

उसने कहा, "ठीक है, पर तुम कभी वापस नहीं आ पाओगी।"

रूमाना ने कहा, "ठीक है।"

परी ने कहा, "अच्छा चलते हैं।"

रूमाना, "मैं कैसे उड़ूँ, तुम मुझे हमेशा के लिए पंख नहीं दे सकती?"

"अच्छा देती हूँ।" और वह परी उसे बादलों में ले गई। उसकी तरह वहाँ और भी बहुत सारे लोग थे। उसे वहाँ बहुत मज़ा आया और वह वहीं पर रह गई। वह भी उनकी तरह परी बन गई।

उसने परी से पूछा – "क्या मैं दोस्तों को ला सकती हूँ। उसने कहा ठीक है। अब उसके दोस्त भी वहाँ आ गए। वह अपने दोस्तों के साथ वहीं रहने लगी।"

निशा, सातवीं, मंज़िल संस्था, दिल्ली

...एक बैल देखा, वह दर्द से कराह रहा था। मैंने बैल से पूछा, "क्या हुआ? तुम इतने उदास क्यों हो?" तब मैंने देखा कि बैल के पैर में एक बड़ा काँटा लगा है। मैंने काँटे को निकाला। बैल खुश हो गया और पैरों पर खड़े होकर खुशी से भागने लगा। बैल मुझे गेंद के पास ले गया। मैंने गेंद उठाई और बैल मेरे पीछे-पीछे चलने लगा। मेरे दोस्त बैल को देखकर पहले डर गए फिर हिम्मत करके उसे छूने लगे। सब बैल पर सवारी करने लगे। हम सब उसे गोशाला छोड़कर आ गए।

अब हर दिन बच्चे बैल की सवारी करते और उसके लिए कुछ खाने को भी लाते।

अर्नव, पाँचवीं, यैलो ट्रेन स्कूल, कोयम्बतूर, तमिलनाडु

...कि वहाँ बॉल थी ही नहीं। बॉल बहुत ढूँढने के बाद भी नहीं मिली। फिर मैंने हार मान ली और अपने घर चली गई। फिर अगले दिन मैं वापस आई। मैं झाड़ियों में बॉल ढूँढ ही रही थी कि मेरी नज़र पेड़ पर पड़ी। मेरी बॉल कौए के घोंसले में पड़ी है। फिर मैं जल्दी से पेड़ पर चढ़ गई। और घोंसले में से अपनी बॉल निकाली और फिर से खेलना शुरू कर दिया।

अर्जुन कुमार, तीसरी, दीपालया लर्निंग सेंटर, नई दिल्ली

...मैंने देखा कि एक बिल्ली और चूहे दोस्त थे और वे गाना गा रहे थे। और मुझे देखते ही दोनों उस जगह से नौ दो ग्यारह हो गए।

अगले दिन मैं जब स्कूल गई तब मैंने अपने टीचर से पूछा, “क्या चूहा और बिल्ली दोस्त हो सकते हैं?” यह बात सुनते ही टीचर हँस पड़े और तब मैं वहाँ से चली गई और सोचने लगी कि क्या सच में मैंने वहाँ देखा कि चूहा और बिल्ली दोस्त थे और गाना गा रेह थे?

शाम होत ही मैं आम के बगीचे में फिर से गई और उन्हीं झाड़ियों के पास गई जहाँ बॉल गुम हो गई थी और मैंने फिर से देखा कि चूहा और बिल्ली गाना गा रहे थे। और जब मैंने झाड़ियों के पास पेड़ को देखा तो वहाँ एक बच्चा था। मैंने उससे कुछ पूछा भी नहीं कि उसने कहा यह नकली चूहा और बिल्ली मेरा है। मैं कल शाम से इस पेड़ पर हूँ। मुझे चढ़ना आता है लेकिन उतरना नहीं आता, कृपया आप मुझे उतार दो। मैंने उसे उतार दिया। उस लड़के ने कहा, “धन्यवाद”।

सौजन सिन्हा, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

...वहाँ पर एक गुफा है, ऐसा लग रहा था जैसे कोई यहाँ पर रोज़ आता-जाता हो, मुझे तो अब भय भी लगने लगा था। मैंने वहाँ से जाकर दोस्तों से कहा, “यह रही बॉल।” टीनू ने पूछा, “तुम उदास और भयभीत लग रही हो।” मैंने कहा, “कुछ बात नहीं, मेरा मन नहीं कर रहा, मैं घर जाती हूँ।”

मैं घर आ गई। दिनभर सोचती रही। रात होने पर जैसे ही सभी सो गए मैं मोमबत्ती लेकर वहाँ गई। मैंने देखा कुछ आदमी कुछ कर रहे हैं। और आगे जाकर देखने लगी। तो मैंने देखा वे लोग एक बच्ची को मार रहे थे। मुझे बहुत रोना आया, मैं वहाँ से भाग आई। मैं रोज़ अखबार पढ़ती थी। मैंने अखबार देखा, उस पर लिखा था – एक बच्ची गायब हुई है। कुछ लोग उसे उठाकर ले गए हैं, जिसको भी मिले पता चले हमें बता देना। सरकार की तरफ से उसे इनाम मिलेगा। मैंने सोचा वह लड़की तो मैंने उन लोगों के साथ कल देखी थी। मुझे उन्हें बताना ही होगा। मैंने पुलिस को अपने साथ लेकर जाकर वह जगह बताई और कहा, “उन्होंने उस बच्ची को मार डाला।” सभी उस जगह पर छिप गए। तभी वह एक और बच्ची को लेकर आया। पुलिस ने उसे पकड़ लिया। उससे कारण पूछा गया कि बच्ची को क्यों मारा? उसने कहा, “मुझे बच्चों से नफरत है। उसे लास्ट में फाँसी हुई और मुझे सरकार से इनाम मिला। लेकिन मैंने इनाम के लिए ये सब नहीं किया।

राजुली शाह, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

...तो मैंने देखा कि झाड़ियों में एक सोने का बैट है। मैंने उस बैट को वहीं छिपा दिया और बॉल उठाकर मैं आ गई। मेरे दोस्तों को पता चल गया कि वहाँ कुछ है। सारे दोस्त वहीं गए और सभी ने कहा कि सोने की बैट मेरी है। और एक दोस्त ने कहा कि रुको, बैट मे कुछ लिखा है। सब ने पढ़ा – हर दिन खेल खेला करो।

सब बच्चे बड़े हो गए और सभी का भारतीय क्रिकेट टीम में सिलेक्शन हो गया। सभी ने बैट से खेल खेलकर भारतीय टीम को जिता दिया।

देवेन्द्र, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

– सजिता नायर और दवंगरा

अण्डों का आकार कैसे तय होता है?

अण्डे विविध आकारों के होते हैं – एकदम गोल (कुछ उल्लुओं के) से लेकर शंकु (अबाबील के) और अण्डाकार (मुर्गी के) तक। यह सवाल वैज्ञानिक काफी समय से पूछते आ रहे हैं कि अण्डों के आकार में इतनी विविधता क्यों है और किसी प्रजाति के पक्षियों के अण्डे के आकार पर किन बातों का असर पड़ता है।

कई वैज्ञानिक इस मामले में अपने विचार रख चुके हैं। कुछ का कहना है कि अण्डों के आकार से तय होता है कि घोंसले में कितने अण्डे रखे जा सकेंगे। अन्य मानते हैं कि अन्दर विकसित होते भ्रूण को ऑक्सीजन की सप्लाई आकार का मुख्य निर्धारक है जबकि कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि घोंसलों में से अण्डों को लुढ़ककर गिरने से बचाने में आकार की भूमिका है। फिर पिछले साल मैरी स्टोडार्ड ने 1400 किस्म के पक्षियों के करीब 50 हज़ार अण्डों की जाँच के आधार पर कहा कि अण्डों के आकार का सम्बन्ध उड़ने की ज़रूरत से निर्धारित होता है। ज़्यादा तेज़ी-से और दूर उड़ने वाले पक्षियों के अण्डे कम गोल होते हैं। अध्ययन तो काफी विशाल था किन्तु कई वैज्ञानिक स्टोडार्ड के इस निष्कर्ष से सहमत नहीं थे।

इंग्लैंड के टिम बर्कहेड भी इन अन्य वैज्ञानिकों में से एक थे और वह उन पुराने विचारों की जाँच करने लगे जो स्टोडार्ड के अध्ययन से पहले प्रचलित थे। उन्होंने सामान्य मुर्र और उसके निकट सम्बन्धी पक्षियों के अण्डों का अध्ययन किया। ये सभी पक्षी चट्टानों की कगारों पर अण्डे देते हैं। मुर्र के अण्डे नाशपाती आकार के होते हैं। ये पक्षी एक बार में एक नीले रंग का चितकबरा अण्डा देते हैं और एक छोटी-सी जगह में बहुत सारे मुर्र अण्डे देते हैं। इस जगह पर अण्डे का टिक पाना मुश्किल होता है। थोड़ा-सा असन्तुलन पैदा होने पर अण्डा लुढ़ककर टपक सकता है।

बर्कहेड और उनके साथियों ने मुर्र के अण्डा देने के ऐसे एक स्थल की अनुकृति अपनी प्रयोगशाला में बनाई। इस पर रेगमाल चिपका दिया गया था ताकि चट्टान का खुरदरापन बना रहे। अब इसकी कगार पर एक अण्डा मुर्र का रखा और दूसरा अण्डा उसके एक निकट सम्बन्धी का रखा जो थोड़ा लम्बा दीर्घवृत्ताकार (जिसे हम अण्डाकार कहते हैं) था।

देखा गया कि मुर्र का अण्डा इस परिवेश में कहीं ज़्यादा स्थिर रहा। जब चट्टान की ढलान बढ़ाई गई तो भी वह टिका रहा। बर्कहेड का कहना है कि मुर्र का अण्डा एक तरफ से थोड़ा नुकीला होता है। इस वजह से जब वह लुढ़कने लगता है तो सीधी रेखा में न लुढ़ककर गोलाई में लुढ़कता है जिसकी वजह से वह गिरता नहीं बल्कि गोल-गोल घूमता रहता है।

यही प्रयोग 30 अन्य प्रजातियों के अण्डों पर भी दोहराया गया। इस आधार पर उन्होंने निष्कर्ष दिया है कि अण्डा देने की जगह ज़्यादातर अण्डों के आकार में विविधता की व्याख्या करती है।

एक अन्य समूह ने भी कृत्रिम रूप से निर्मित अण्डों पर प्रयोग करके यही निष्कर्ष निकाला है। वैसे अभी मामला पूरी तरह सुलझा नहीं है और इसके लिए हमें आगे के शोध तथा नए निष्कर्षों का इन्तज़ार करना होगा।

स्रोत फीचर्स से साभार

कई दिनों तक सब इकट्ठा नहीं हुए। तय किया गया था कि बौना पहाड़ जब भी जाएँगे, सब साथ जाएँगे। कोई गया नहीं। बौना पहाड़ इससे सूना रहा। बौना पहाड़ उनके आने का इन्तज़ार करता। पहाड़ का बस चलता तो खुद बच्चों के साथ खेलने चला जाता, पूछता, “मेरी गलती क्या है? मेरे साथ खेलने क्यों नहीं आए। छुपन-छुपाई का खेल मुझे अच्छा लगता है। पर मैं इतना बड़ा हूँ कि खुद छुप नहीं सकता। मेरे रहस्य मेरे खिलौने हैं। उनको छुपाकर रखता हूँ। तुम लोग उन्हें ढूँढो और रहस्यों के साथ खेलो।”

विनोद कुमार शुक्ल

चित्र: हबीब अली

उड़ती चिड़ियों के झुण्ड

पहाड़ बच्चों के साथ खेलता था। यह एक सच्चाई थी जिसे केवल पहाड़ जानता था। पहाड़ पर बच्चों का चढ़ना, खेलना-कूदना किसी भी कारण से प्रतीकात्मक हो जाता। आकाश में एक छोटी चिड़िया का उड़ना प्रतीकात्मक-सा लगता। आकाश भी चिड़ियों के साथ खेलता है। वह उड़ने की जगह को कम नहीं करता। अनन्त बना रहता है। गौरैया चिड़िया का बड़ा झुण्ड आकाश में उड़ रहा था। एक साथ चिड़ियों का उड़ना देखो तो लगता उड़ान का झण्डा है। और सब मिलकर फहरा रहे हैं। इस उड़ान के झण्डे में गौरैया चिड़िया का बच्चा भी शामिल था, जिसके नए-नए पंख निकले थे।

बोलू के मित्रों के झुण्ड में सुनचुक्की भी थी। कंकड़-पत्थर भी था, जो कभी टोली में शामिल होता, कभी नहीं होता। जैसे सभी थे। बीनू भी नहीं दिख रहा था।

कूना ने टोली को कह रखा था कि बाहर निकलें तो टहनी पेंसिल को साथ में लेकर चलें। टहनी पेंसिल टेढ़ी होती। हाथ में सम्हालकर ले जाना पड़ता। उनकी छोटी जेब में तो आती नहीं इसलिए जान-बूझकर भूल जाते। इससे उन लोगों को दौड़ने-कूदने में सहूलियत रहती।

कूना के पास दो टहनी पेंसिलें थीं। दोनों छिली हुईं। ज़ाहिर है एक पेंसिल बोलू के काम आ सके। वैसे यदि बारी-बारी से लिखना हो तो एक पेंसिल सबके काम आ सकती है। एक साथ लिखने के लिए तो सबके पास होनी चाहिए।

सुनचुक्की ने आकाश में गौरैया चिड़िया के झुण्ड को देखा। उस झुण्ड में गौरैया चिड़िया का बच्चा होगा, यह उसने नहीं सोचा था। पर उड़ती गौरैया चिड़िया ने सुनचुक्की को पहचान लिया था। सुनचुक्की को देख चिड़िया झुण्ड से अलग हुई और सुनचुक्की की तरफ जाने लगी। सुनचुक्की का ध्यान कूना की बात पर था और सुनचुक्की बौना पहाड़ पर पहली बार चढ़ रही थी।

कूना से सुनचुक्की ने पूछा, "अपन पहाड़ पर क्यों जा रहे हैं? क्या वहाँ कोई काम है?"

कूना बोली, "किस काम से जा रहे हैं, यह मुझे नहीं मालूम।"

सुनचुक्की बोली, "बोलू से पूछ लेते हैं।"

"किस काम से जाते हैं यह किसी को मालूम नहीं रहता। पर जहाँ जाते हैं वहाँ काम रहता है। पहले भी काम हुआ।" कूना ने कहा।

सुनचुक्की ने पूछा, "क्या काम हुआ?"

कूना बोली, "रास्ता मिल जाता है। उस रास्ते पर काम की चीज़ मिल जाती है।"

सुनचुक्की बोली, "बताओ, क्या मिला?"

कूना बोली, "एक बार कंकड़ जितना पत्थर मिला जो बहुत भारी था। कंकड़-पत्थर बोलू की पीठ पर लदा रहता है। कभी घर चला जाता है, ज़मीन के अन्दर एक कमरे का उसका घर है।"

कूना ने एक कंकड़ ज़मीन पर से उठाया और सुनचुक्की को बताया, "इससे छोटा कंकड़ है। उसे मैं नहीं उठा सकी। तुम भी उठाकर देखना।"

सुनचुक्की बोली, "और क्या मिला बताओ?"

कूना बोली, "बादल पक्षी दिखा। उसके अण्डे मिले।"

सुनचुक्की हैरान थी। सोच रही थी काश वह भी इनके साथ होती। आज कुछ ऐसा हो जाए! उसने कूना का हाथ पकड़ लिया कि पूरी बात बताए बिना वह बोलू के साथ न चली जाए।

सुनचुक्की ने कूना से कहा, "धीरे-धीरे चलते हैं। मुझे सब बता दो।"

कूना ने कहा, "बताने को बहुत है। एक गिरता हुआ शहर मिला था। उस गिरते हुए शहर में सब गिरते हुए रहते हैं।"

सुनचुक्की उत्साह और आश्चर्य से भर चुकी थी। तभी दोनों के बीच गौरैया-बच्चा बिल्कुल कान के पास से उड़ता हुआ निकला। दोनों चौंक गए। सुनचुक्की जो कूना को पकड़े थी, का हाथ छूट गया। अबकी बार सुनचुक्की ने कूना का हाथ ज़ोर-से पकड़ा और उसका ध्यान चिड़िया से फिर हट गया।

सुनचुक्की ने पूछा, "गिरते शहर में तुम गई थीं?"

कूना बोली, "सब गए थे। गिर गए थे।"

सुनचुक्की ने पूछा, "घूमे-फिरे?"

कूना बोली, "गिरते-पड़ते घूमे-फिरे।"

उधर, चिड़िया सुनचुक्की का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने में लगी थी। वह, सामने की चट्टान जो सुनचुक्की की तरफ थी, उस पर जा बैठी। पर दोनों बात करते हुए आगे चले गए। कूना ने चिड़िया को चट्टान पर बैठे देखा था। पर सुनचुक्की, कूना को कोई और बात करने नहीं दे रही थी। चिड़िया फिर उड़कर उनके आगे की चट्टान पर जाकर बैठ गई और रास्ता देखने लगी। वे चट्टानों से चढ़ते-उतरते चिड़िया से दूर चले गए।

चिड़िया को बार-बार सामने आते देख, कूना ने सुनचुक्की से कहा, "आगे चट्टान पर जो चिड़िया बैठी है, तुमसे बात करना चाहती है। मुझे लगता है चिड़िया तुमको पहचानती है।"

सुनचुक्की उसके पास रुकी, तो चिड़िया पंख फड़फड़ाकर अपनी खुशी ज़ाहिर करने लगी। सुनचुक्की ने पूछा,"गौरैया, क्या बात है?"

चिड़िया ने कहा, "तुमने मुझे पहचाना नहीं। चुप्पी जगह में तुमने मेरी जान बचाई थी। और लम्बे डगवाले लड़के ने तुम्हारे कहने पर मुझे घोंसले में पहुँचा दिया था।"

सुनचुक्की यह सुनकर खुशी से नाच उठी। अगर उसके पंख होते तो उसके भी पंख फैल जाते।

सुनचुक्की ने कहा, "तुम्हें मैंने नहीं बचाया, लम्बे डगवाले लड़के ने बचाया।"

गौरैया ने कहा, "लम्बे डगवाला लड़का मेरी बोली नहीं समझता। मैं उससे बात करना चाहती थी, दूर से देखती हूँ। उसके पास जाने की कोशिश करती हूँ तो वह चलते हुए दूर हो जाता है। वह बैठा दिखे तो उससे बात करूँ। पर कैसे?"

सुनचुक्की ने कहा, "मैं तुम्हारी बात करवा दूँगी।" तभी आकाश पर उड़ती चिड़ियों के झुण्ड से किसी ने उसे पुकारा होगा। शायद उसकी माँ या कोई दूसरा।

चिड़िया ने कहा, "मैं फिर आऊँगी।"

सुनचुक्की ने कहा, "तुम हमारी टोली में हो। जब भी तुम्हारा मन हो हमारे साथ खेलने आ जाना।"

चिड़िया ने कहा, "अच्छी बात है।" और वह उड़कर अपनी टोली में शामिल हो गई।

सुनचुक्की ने कूना को बताया, "चुप्पी जगह में घोंसले से जो बच्चा गिर गया था, वही बच्चा था।" जानकर कूना को भी अच्छा लगा।

सुनचुक्की ने कहा, "लम्बे डगवाले लड़के से इसे मिलवाना है। मैंने उसे कहा है कि अब वह हमारी टोली में शामिल है।"

फिर सुनचुक्की ने पूछा, "बताओ और क्या मिला?"

कूना ने कहा, "एक पत्थर की किताब मिली।"

सुनचुक्की बोली, "क्या वह किताब तुम्हारे पास है?"

कूना बोली, "नहीं। बहुत बड़ी और बहुत भारी किताब है। जितनी भारी यह चट्टान है।"

कूना ने उँगली के इशारे से चट्टान को दिखाया।

सुनचुक्की ने कहा, "अरे बाप रे।"

कूना बोली, "एक पन्ना नहीं पलटा सकते।"

सुनचुक्की ने पूछा, "उसमें क्या लिखा है?"

कूना बोली, "कोरी किताब है। टहनी पेंसिल से लिख सकते हैं।"

उसी समय बोलू जो आगे ऊपर एक चट्टान पर खड़ा था, चिल्लाया, "कूना, जल्दी आओ, रास्ता मिल गया।"

दोनों बहुत उत्साह से आगे बढ़े। कूना ने कहा, "तुम लोग वहीं खड़े रहना। तुमको देखते हुए ही तुम्हारे पास आ सकते हैं।"

बोलू चिल्लाया, "बहुत देर हो जाएगी, जल्दी आओ। हम लोग खड़े हैं।"

वे दोनों बहुत पिछड़ गए थे। गौरैया से खड़े होकर बात भी कर रहे थे। कूना ने सुनचुक्की से कहा, "जल्दी चलो। रास्ता खो जाने का डर रहता है।"

सुनचुक्की ने पूछा, "फिर लौटेंगे कैसे?"

कूना बोली, "लौटने का रास्ता खोता नहीं। लौटने के अनेक रास्ते मिल जाते हैं।"

लौटने के रास्ते का मिलना। बच्चों के लिए बड़ी सहूलियत थी कि वे अपने घर सकुशल पहुँच जाएँ।

सुनचुक्की ने कहा, "अगर लौटने का रास्ता खो जाए तो गौरैया को बुलाकर उससे रास्ता पूछ लूँगी।"

कूना ने कहा, "गौरैया पता नहीं कहाँ होगी? तुम उसे कैसे बुलाओगी?"

सुनचुक्की बोली, "किसी भी गौरैया से कह दूँगी।"

कूना ने कहा, "उसे बुलाने में देर हो सकती है। जिस चिड़िया से तुम गौरैया को बुलाने के लिए कहोगी, उसी से रास्ता पूछ लेना।"

जारी...

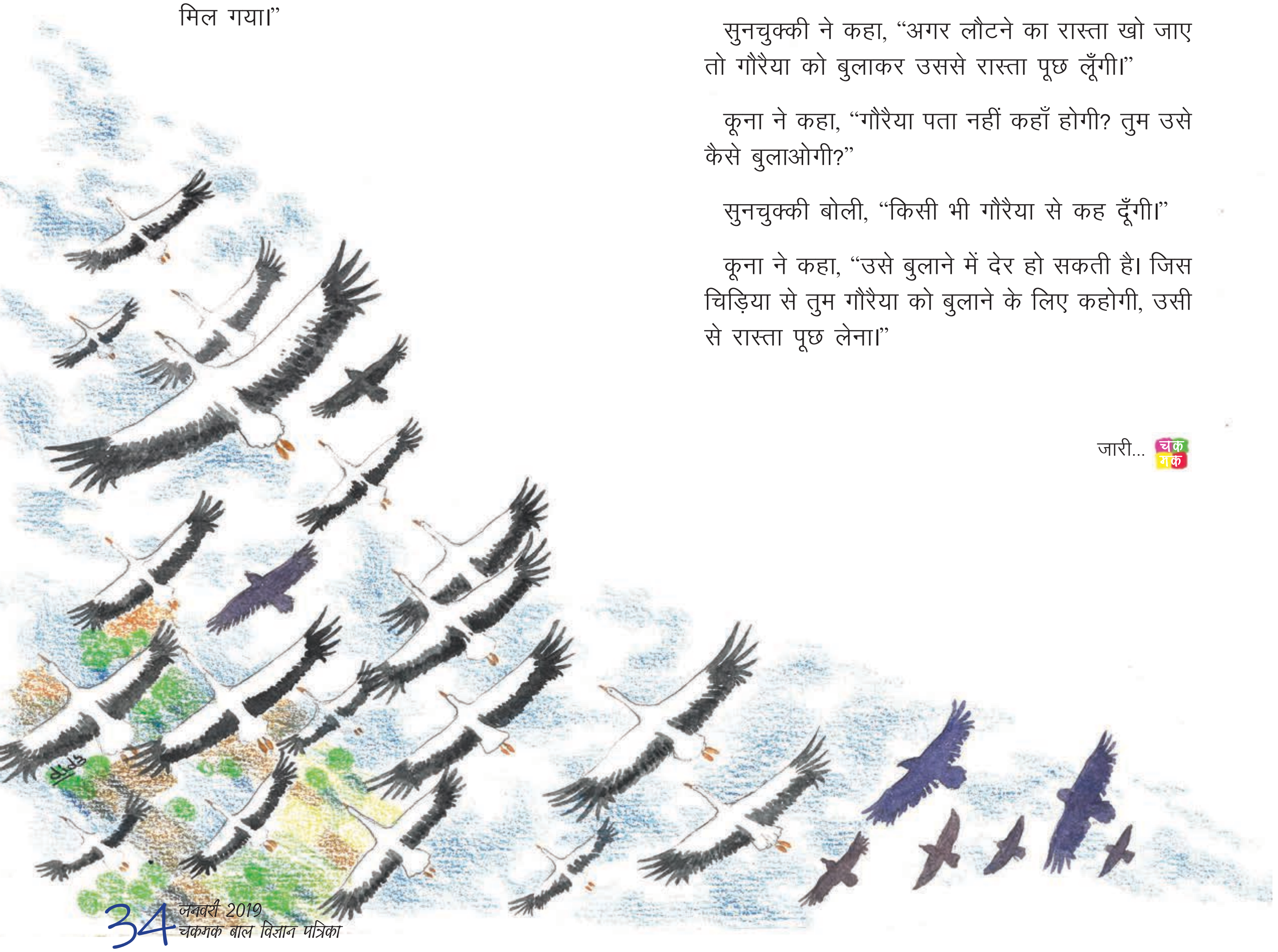

मेरा पन्ना

जाड़ा

आलोक प्रताप सिंह
चौथी, सेंट थॉमस हाई स्कूल
पटना, बिहार

सर्दी ने नाक में कर दिया दम
लेकिन कुछ नहीं कर सकते हम
कम्बल के अन्दर भी सर्दी
कम्बल के बाहर भी सर्दी
इतनी सर्दी किसने कर दी
कि अण्डे की भी जम गई ज़र्दी

पतले-मोटे, लम्बे-छोटे
सिकुड़ी सबकी चाल हो गई
छींक-छींककर सर्दी में
नाक सबकी लाल हो गई
धूप में बैठें तो भी सर्दी
छाँव में बैठें तो भी सर्दी
इतनी सर्दी किसने कर दी
कि अण्डे की भी जम गई ज़र्दी

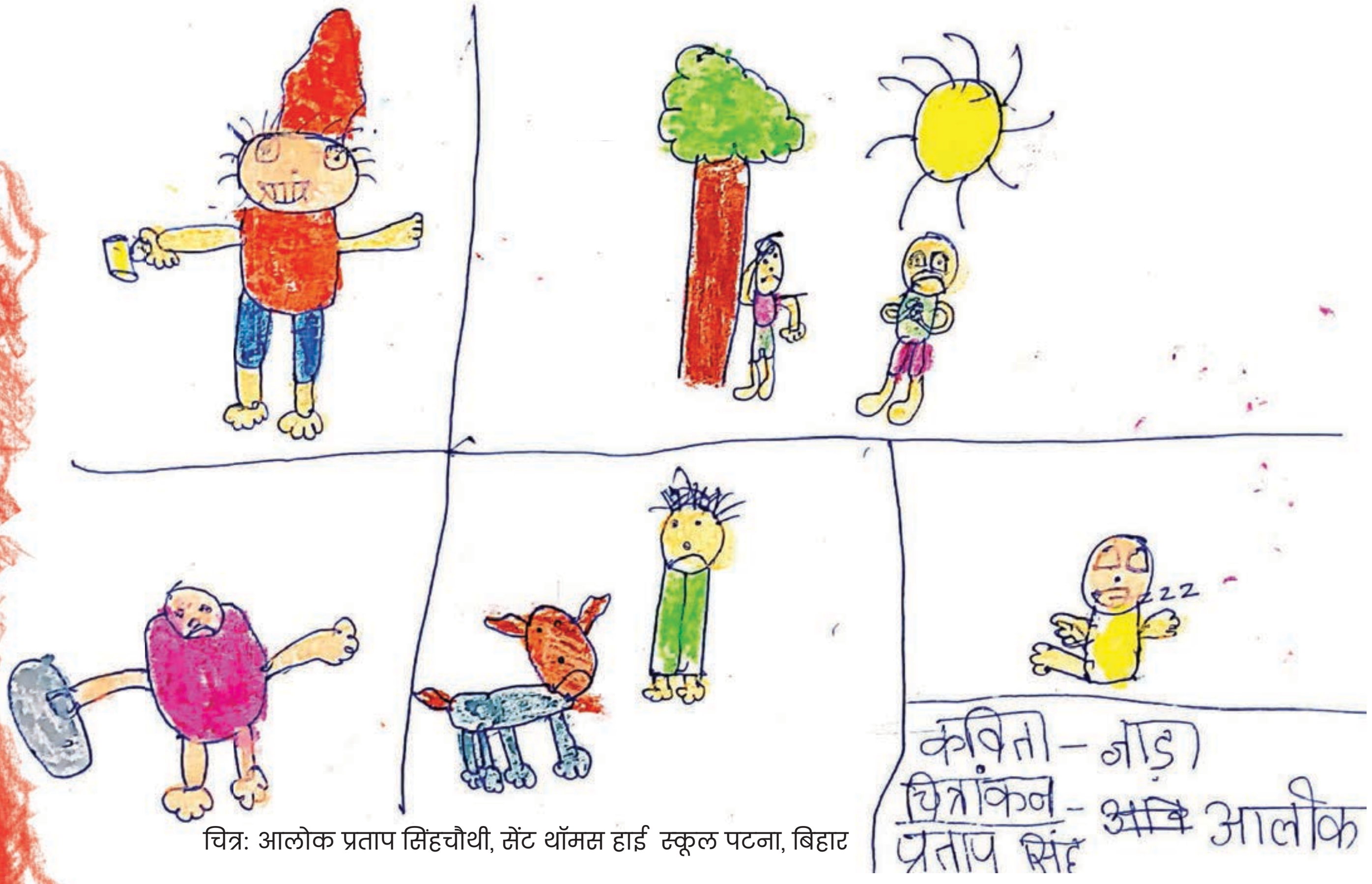

चित्र: आलोक प्रताप सिंहचौथी, सेंट थॉमस हाई स्कूल पटना, बिहार

चित्र: विमला, तीसरी, रचोली, हिमाचल प्रदेश

मित्रों के साथ

राहत प्रवीन
छठीं, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

एक दिन हम अपने मित्रों के साथ बगिया में घूमने जा रहे थे तो एक ज़हरीला साँप फन उठाकर बैठा था। हमारे एक मित्र ने साँप को देखा तो वह समझा कोई खिलौना है। उसे छूते ही साँप ने उसे काट लिया। फिर हमारे दूसरे दोस्त ने कहा कि गर्म पानी से धो दो। फिर हम लोग उसे गाँव लेकर गए। गाँव में एक बूढ़ा व्यक्ति है जो साँप के काटे का इलाज करता है। उसने दवा दी। हम लोगों ने उसे दवा खिला दी। आधे घण्टे के बाद मेरे दोस्त को होश आ गया और वह ठीक हो गया।

मिलकर सीखें

खुशी
आशनां समूह, उमंग स्कूल, हरयाणा

हम सब जानते हैं कि जिस जगह पर हम बैठते हैं उसकी सफाई होना ज़रूरी है क्योंकि गन्दगी से बीमारी फैलने का डर होता है। वैसे मुझे ये भी लगता है कि हमारे घरों में साफ-सफाई का काम सिर्फ महिलाओं द्वारा ही किया जाता है। आज तक मैंने पुरुषों को घरों में साफ-सफाई करते नहीं देखा है। हमारे घरों में लड़कियों को बचपन से ही साफ-सफाई करना सिखा दिया जाता है। शुरुआत से ही लड़के और लड़की के बीच में दूरियाँ बना दी जाती हैं। इस तरह से हमारे समाज में सबके कामों को लड़के-लड़की के कामों में बाँट दिया जाता है। इससे लड़के व लड़कियों के दिमाग पर अलग-अलग तरह का काफी बुरा असर पड़ता है। इस असर के कारण जब लड़के बड़े हो जाते हैं तो उन्हें लगता है कि साफ-सफाई करना बुरी बात है। यह उनका काम नहीं है। इसे करने में उन्हें शर्म आने लगती है और वो कुछ शरारती भी हो जाते हैं। पर मुझे लगता है कि साफ-सफाई पुरुषों को भी करनी चाहिए क्योंकि गन्दगी हम सब फैलाते हैं। वैसे भी मिल-जुलकर काम करना अच्छा होता है। इससे झगड़े भी कम होते हैं। हमारे स्कूल में सभी बच्चे व शिक्षक मिलकर सफाई करते हैं।

चित्र: अंकित, छठीं, अक्षरनन्दन स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

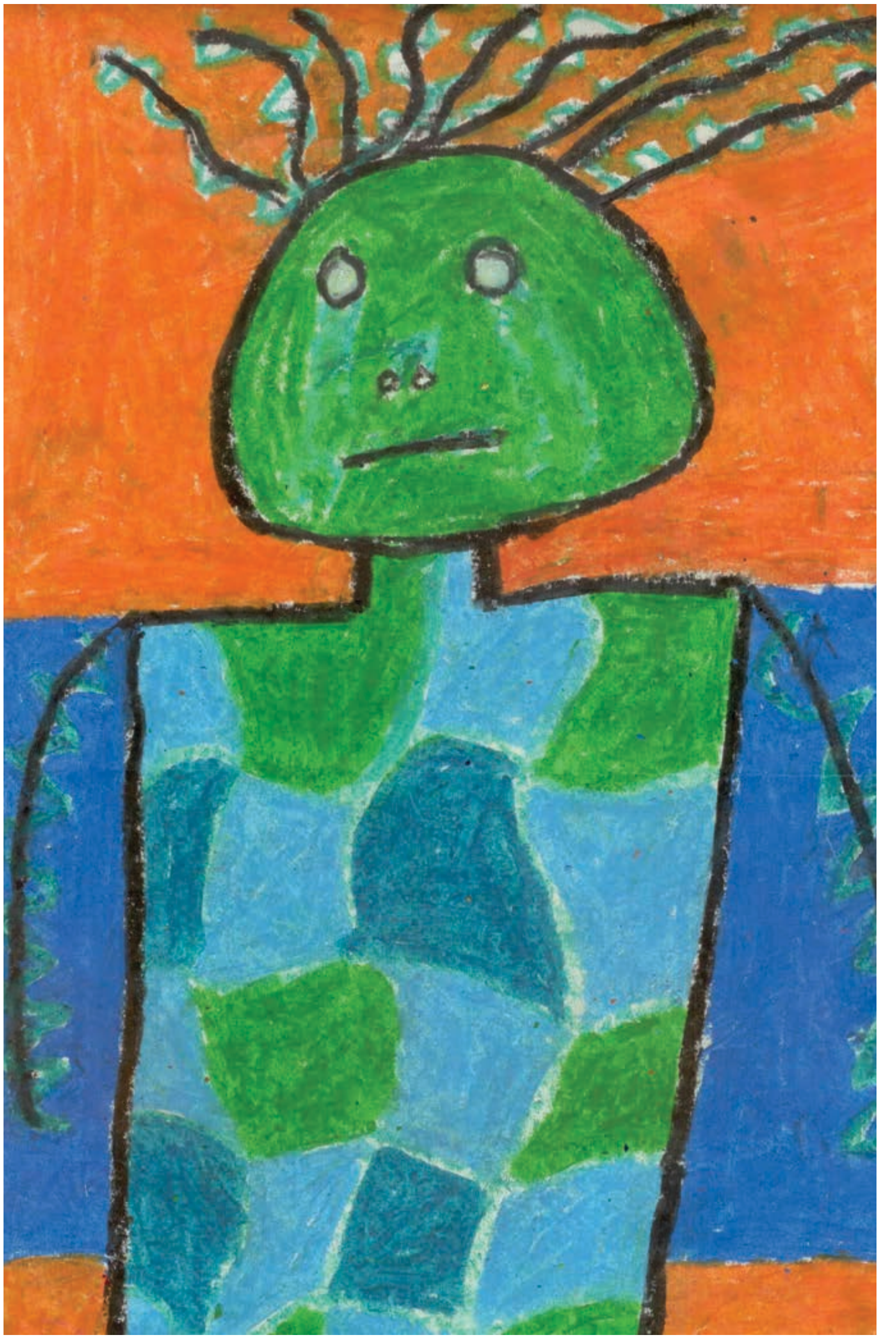

बचपन की एक घटना

लूम्बा
आठवीं, डीपीएस लुधियाना, पंजाब

वह दिन जब मैं पूरे 6 साल का हुआ, उस दिन मेरा जन्मदिन था। मैं सुबह अपने भाइयों के साथ घर की छत पर दौड़ लगा रहा था। खेलते-खेलते मेरा पैर फिसल गया और मेरा सिर पत्थर के कोने पर जा लगा। उस पत्थर का कोना बहुत नुकीला था। मेरा सिर बहुत दर्द करने लगा। जब मैंने अपना हाथ सिर पर लगाया तो मैंने अपने हाथों पर खून लगा देखा। बहुत खून बहने के कारण मेरे दिल की धड़कनें तेज़ हो गईं और मैं बहुत घबरा गया। मेरी माँ ने देखा मेरा सिर फट गया है और यहाँ टाँके लगेंगे। घर पर उस वक्त कोई नहीं था। मेरी माँ ने मुझे पड़ोसी की कार में बिठाया और अस्पताल ले गईं। अस्पताल में डॉक्टर ने माँ को कहा कि बहुत खून बह गया है। तुरन्त ऑपरेशन हॉल में दाखिल करना होगा। पूरे दो घण्टे लगातार मेरा इलाज चलता रहा। मेरी माँ डरकर बाहर बैठी थीं और सोच रही थीं कि आज मेरे बेटे का जन्मदिन है और वह इस मुसीबत से जूझ रहा है। तभी डॉक्टर ने बाहर आकर कहा कि आपका बेटा सही-सलामत बच गया है। मेरी माँ खुशी के मारे रोने लग गईं।

चित्र: रिनचेन दोरजी, सातवीं, तवांग, मिज़ोरम

घर

आँचल
छठीं, दीपालया, दिल्ली

पापा क्यों अच्छा लगता है
अपना प्यारा-प्यारा घर
घूम-घाम लें, खेल-खाल लें
नहीं भूलता लेकिन घर

पर, पापा एक बात बताओ
नहीं ना होता सबका घर
क्या करते होंगे वो बच्चे
जिनके पास नहीं है घर

चित्र: अरीना गुप्ता, पहली, द हेरिटेज स्कूल, रोहिणी, दिल्ली

कहानी एक कबूतर की

पुष्पा दसाणा
पाँचवीं, प्रथम संस्था, जयपुर, राजस्थान

एक कबूतर था। वह चाहता था कि वह खुद अपने हाथ से पेड़ लगाकर उसे रोज़ाना पानी देकर बड़ा करे और फिर उस पर अपना घोंसला बनाए। ऐसा करने के लिए वह दूर-दूर उड़कर पेड़ का एक पौधा लेकर आया। और उसे एक साफ-सुथरी जगह पर लगाया। उसने कई सालों तक पानी देकर उसे बड़ा किया। और फिर जब वह पेड़ बन गया तो वह उस पर अपना घोंसला बनाकर रहने लगा। लेकिन दूसरे कबूतरों को उससे जलन होने लगी। सारे कबूतर उसका घोंसला बिगाड़ना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने एक तरकीब सोची। तरकीब के मुताबिक वह उस कबूतर को अपने साथ दूर किसी और जगह पर ले गए और इस बीच कुछ कबूतरों ने उसका घोंसला बिगाड़ दिया। उस कबूतर ने कितनी मेहनत से घोंसला बनाया था लेकिन बाकी के कबूतरों ने इस बारे में कुछ नहीं सोचा।

भूलभुलैया

ये एलियन हरे प्लेनेट तक पहुँचना चाहता है, क्या तुम उसकी मदद कर सकते हो?

माथा पच्ची

1. नीचे माचिस की 12 तीलियों से कुछ चौकोर बनाए गए हैं। तुम्हें 2 तीलियों को इस तरह हटाना है कि कुल 2 ही चौकोर बचे रहें। कैसे करोगे?

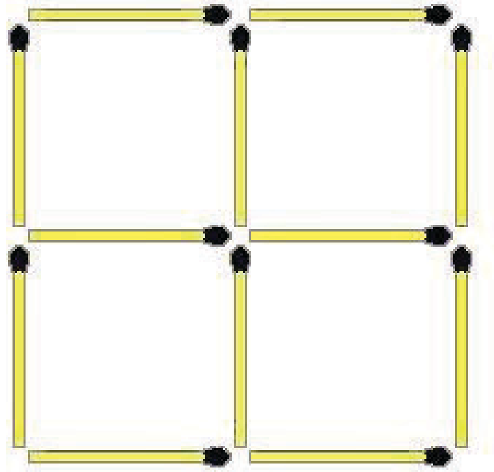

2. रैनी के पास एक घोड़ा है। उसने अपने दोस्तों से घोड़े के रंग का अनुमान लगाने को कहा। अयान बोला, 'मेरे खयाल से वह काला नहीं है।' बेनी बोला, 'या तो वह भूरा है या सफेद।' शर्ली बोली, 'मेरे खयाल से वो भूरे रंग का है।' रैनी ने कहा कि तुम तीनों में से कम से कम एक का अनुमान सही है और कम से कम एक का गलत। यदि रैनी के घोड़े का रंग ऊपर बताए गए रंगों में से ही है तो उसका घोड़ा कौन-से रंग का है?

3. तोशी के घर में चोरी हो गई। पुलिस आई तो उसने बताया कि घर में रखे सारे कीमती गहने चोरी हो गए हैं। घर के बाहर टूटे हुए काँच की ओर इशारा करते हुए उसने कहा चोर शायद खिड़की के रास्ते अन्दर आया होगा। पुलिस ने कहा कि आपने झूठी रिपोर्ट लिखाई है। आपके घर में कोई चोरी नहीं हुई है। पुलिस को इतना यकीन क्यों था कि कोई चोरी नहीं हुई?

4. राशिद जानना चाहता है कि किस कम्बल से ज़्यादा गर्मी मिलेगी – दो इंच के एक कम्बल से या एक इंच के दो कम्बलों से। ध्यान रहे कि सभी कम्बल एक ही तरह की सामग्री के बने हैं।

फटाफट बताओ कि

वह क्या है जो आधे सेब जैसा दिखाई देता है?

(सेब का बाकी आधा)

खाद के 3 ढेरों को खाद के 2 अन्य ढेरों से मिला दिया जाए तो कुल कितने ढेर होंगे?

(एक ढेर)

सर पर ताज,
गले में थैला
उसका नाम बड़ा
अलबेला

([illegible])

साथ-साथ मैं जाती हूँ,
हाथ नहीं पर आती हूँ

(परछाई)

गोल-गोल चेहरा,
पेट से नाता गहरा।

([illegible])

इक लाठी में
गाँठें दस, जो
भी चाहे पी
ले रस

(गन्ना)

सुडोकू-15

5		2	4		6		
8					1		5
		3	8			4	2
4		5		7			
1				8		6	
		6	2			1	7
	4		7	2			
	5			6		8	4

दिए हुए बॉक्स में 1 से 8 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 8 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको आठ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 8 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

माथापच्ची जवाब

1.

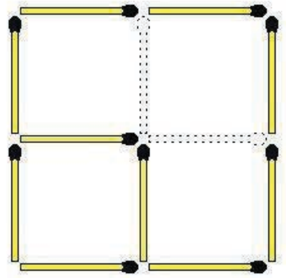

2. यदि घोड़ा भूरे रंग का हुआ तो सभी दोस्तों का अनुमान सही हो जाएगा। ऐसा तो है नहीं। यदि घोड़ा काले रंग का हुआ तो सभी का अनुमान गलत हो जाएगा। ऐसा भी नहीं है। यानी कि घोड़ा सफेद रंग का है।

3. यदि चोर ने खिड़की का काँच बाहर से तोड़ा होता तो काँच के ज़्यादातर टुकड़े घर के अन्दर मिलते, घर के बाहर नहीं। इसीलिए पुलिस समझ गई कि काँच को अन्दर से तोड़ा गया है।

4. एक इंच के दो कम्बलों से ज़्यादा गर्मी मिलेगी क्योंकि दोनों कम्बलों के बीच की हवा इंसुलेशन की तरह कार्य करती है।

भूलभुलैया का जवाब

दिसम्बर की चित्र पहेली का जवाब

1 चि	म	2 नी		3 चो	क	4 र		5 चा
त्र		6 ल	7 प	ट		8 प	त्थ	र
9 का	रा	गा	र		10 नो	ट		मी
र		य		11 सीं	क		12 दा	ना
	13 हँ		14 झा	ग		15 झा	ल	र
	16 सि	ग	ड़ी		17 न		ची	
18 ब	या			19 सि	ट	20 क	नी	
रा		21 कु	र	ता		क		22 ग
23 त	क	ली		24 र	ज	नी	गं	धा

सुडोकू-14 का जवाब

1	3	4	2	7	6	5	8
8	6	7	5	4	3	1	2
2	5	8	1	3	7	4	6
7	4	3	6	5	2	8	1
4	8	2	7	6	1	3	5
6	1	5	3	8	4	2	7
3	2	6	8	1	5	7	4
5	7	1	4	2	8	6	3

चित्रपहेली डिज़ाइन: दिलीप चिंचालकर

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

फोटोग्राफर

वीरेन्द्र दुबे
चित्र: हबीब अली

कौए को फोटोग्राफी का नया-नया शौक लगा। अब खाना-पीना भूलकर सवेरे-सवेरे से गले में कैमरा लटकाए दिन भर यहाँ से वहाँ उड़ता रहता। उसकी आवाज़ सुनकर हर कोई फोटो उतरवाने आ जाता।

कौआ किसी-किसी को साफ मना कर देता, कभी शान से बताता, कैसे खड़े हों, बैठें, कौन से कपड़े ठीक रहेंगे, बाल ऐसे नहीं ऐसे कर लो, मुँह मत बनाओ, मुस्कराओ, छोटे आगे, बड़े पीछे खड़े हो जाओ, स्माइल प्लीज़ कहता और सबके मुस्कराते ही ओके कहकर उड़ जाता है।

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म. प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन